

जनवरी-मार्च, 1990 (खण्ड-15, अंक-4)

1. साध्वी अशोकश्री, कल्पसूत्र : एक पर्यवेक्षण, पृ. 1-6.
2. साध्वी निर्वाणश्री, संस्कृत साहित्य का आधुनिक साहित्य के संदर्भ में मूल्यांकन, पृ. 7-10.
3. जैन, आचार्य राजकुमार महर्षि घरक की अनेकान्त सम्बन्धी अवधारणा, पृ. 11-16.
4. जोशी, कमला, पुनर्जन्म-प्राचीन दार्शनिकों की दृष्टि में, पृ. 17-20.
5. मेहता, संगीता, जैन संस्कृत रत्नोत्र साहित्य : उद्भव एवं विकास, पृ. 21-26.
6. जैन, अमय प्रकाश, 108 का माहात्म्य, पृ. 27-29.
7. लोढ़ा, कल्याणमल, कोहो पीड़ पणासेइ, पृ. 30-41.

अप्रैल-जून, 1990 (खण्ड-16, अंक-1)

1. मुनि किशनलाल, आगमों की प्रामाणिक संख्या : जयाचार्यकृत विवेचन, पृ. 1-11.
2. साध्वी योगक्षेमप्रभा, प्रामाण्यवाद, पृ. 12-19.
3. समणी मल्लिप्रज्ञा, अपरिग्रह-दर्शन, पृ. 20-31.
4. मेहता, मंगल प्रकाश, हिन्दी जैन काव्य का साधनात्मक स्वरूप, पृ. 32-34.
5. सोलंकी, परमेश्वर, समुत्तित्त का शकराज और उसका कालमान, पृ. 35-37.
6. समणी कुसुमप्रज्ञा, काल : एक अनुचिन्तन, पृ. 38-40.
7. शर्मा, गोपाल, कालिदास के नाटकों में लोक-विश्वास, पृ. 41-45.
8. समणी मंगलप्रज्ञा, मतिज्ञान एवं श्रुतज्ञान की भेदरेखा, पृ. 46-48.
9. जैन, अनिल कुमार, परमाणु के मूलभूत गुण, पृ. 49-51.

जुलाई-सितम्बर, 1990 (खण्ड-16, अंक-2)

1. समणी कुसुमप्रज्ञा, उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 1-7.
2. चन्द्रा, के. आर., प्राकृत व्याकरण में प्रयुक्त मध्यवर्ती प और व की परीक्षा, पृ. 8-10.
3. कुमार, रज्जन, पृथ्वीकाय : एक विवेचन, पृ. 11-19.
4. जैन, नंदलाल, जैन शास्त्रों में भव्यामक्ष्य विचार, पृ. 20-34.
5. सोलंकी, परमेश्वर, 'त्रिलोकसार' का कल्की राजा और यूनानी लेखकों का सैण्ड्राकोटस का एक है?, पृ. 35-39.
6. बाली, चन्द्रकांत एवं उपेन्द्रनाथ राय, समुत्तित्त का शकराज और उसका कालमान (प्रतिक्रियाएं) पृ. 40-51.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1990 (खण्ड-16, अंक-3)

1. समणी मल्लिप्रज्ञा, अहिंसा और अपरिग्रह सिद्धान्त का संबंध-निरूपण, पृ. 1-5.
2. समणी मंगलप्रज्ञा, जीव और शरीर के संबंध हेतु, पृ. 6-10.
3. मेहता, मंगलप्रकाश, हिन्दी जैन काव्य : दार्शनिक प्रवृत्तियाँ, पृ. 11-15.
4. जैन, जिनेन्द्र कुमार, भगवती आराधना एवं प्रकीर्णकों में आराधना का स्वरूप, पृ. 16-23.
5. जैन, नंदलाल, जैन शास्त्रों में भव्यामक्ष्य विचार, पृ. 24-37.
6. जोशी, कमला, जैन एवं अन्य भारतीय दर्शनों में मोक्षदशा : एक तुलनात्मक दृष्टि, पृ. 38-43.

जनवरी-मार्च, 1991 (खण्ड-16, अंक-4)

1. साध्वी अशोकश्री, भिक्षु प्रतिमा, पृ. 1-4.
2. समणी कुसुमप्रज्ञा, विनीत-अविनीत की भेदरेखा, पृ. 5-8.
3. समणी मंगलप्रज्ञा, कालिक एवं उत्कालिक सूत्र, पृ. 9-12.

4. दुग्ग, बच्छराज, पारश्वत्य सन्दर्भ में जैन प्रमाण की सत्यता की कसौटी, पृ. 13-17.
5. चन्द्रा, के. आर., प्राचीन प्राकृत में मध्यवर्ती अल्पप्राण व्यंजनों के प्रायः लोप का औचित्य, पृ. 18-24.
6. जैन, रत्नलाल, भारतीय दर्शनों का प्राण-अहिंसा, पृ. 25-30.
7. जोशी, कमला, आध्यात्मिक विकास में सहायक मंत्र, पृ. 31-35.
8. जैन, अमय प्रकाश, जैन साहित्य में अशोक संवत्सर की खोज, पृ. 36-37.
9. सिंह, महेन्द्रनाथ, उत्तराख्ययन सूत्र में वर्णित पंच महाव्रत, पृ. 38-42.
10. त्रिवेद, देवसहाय, कल्की व सन्द्रकुपतस्, पृ. 43-45.
11. गीणगणोदेवसन्क्षेत्रं लाडनूं, पृ. 70.

अप्रैल-जून, 1991 (खण्ड-17, अंक-1)

1. लूनवाल, नानालाल, अनन्त के अनन्त भेद, पृ. 1-4.
2. सोलंकी, परमेश्वर, आचार्य हरिभद्रसूरि का काल-संशोधन, पृ. 5-10.
3. राय, उपेन्द्रनाथ, वीर निर्वाण काल, पृ. 11-26.
4. आनन्द, अरुण, उपाध्याय यशोविजयकृत पार्लजलयोग सूत्रवृत्ति में वर्णित, जैन कर्म-सिद्धान्त, पृ. 27-41.
5. महावीर निर्वाणवाद के सहस्रवर्ष, पृ. 42.
6. राजपूत, भूपसिंह, हांसी की विरल जैन मूर्तियां, पृ. 43-44.
7. त्रिवेद, देवसहाय, सम्राट् समुद्रगुप्त और उसका राजवंश, पृ. 45-50.
8. मुधुकणिकाएं- "निर्वाण काल वर्ष संख्या" पृ. 51-54.

जुलाई-सितम्बर, 1991 (खण्ड-17, अंक-2)

1. मिश्र, विश्वनाथ, ज्ञानप्रामाण्य विवेचन, पृ. 59-66.
2. समणी मंगलप्रज्ञा, आत्मा का यजन, पृ. 67-68.
3. साध्वी राजीमती, आदमी बूढ़ा क्यों होता है?, पृ. 69-72.
4. चन्द्रा, के. आर., सप्तमी एकवचन की प्राचीन विभक्तियां, पृ. 73-75.
5. स्व.काशीप्रसाद जायसवाल, पृ. 76.
6. मिश्र, मांगीलाल, शाश्वत यायावरी जैन श्रमणों की, पृ. 77-82.
7. साध्वी सुरेखाश्री, क्या सामान्यकेवली के लिए अर्हन्त पद उपयुक्त है?, पृ. 83-88.
8. मुनि जिवोजी, मुधुकणिकाएं- "दृष्टांत-शतक री जोड़", पृ. 89-98.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1991 (खण्ड-17, अंक-3)

1. शर्मा, गोपाल, संस्कृत वाङ्मय में लोक-अवधारणा, पृ. 107-110.
2. जैन, भागचन्द्र, जैन-बौद्ध विनय का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 111-118.
3. सिंघवी, सुष्मा, जैननय न्याय द्वारा तत्त्वार्थ-निर्णय, पृ. 119-132.
4. जोशी, जगन्नाथ, भारतीय दर्शन की आशावादिता एवं प्रगतिशीलता, पृ. 133-144.
5. बाली, चन्द्रकान्त, वर्षाऽऽवास का इतिहास, पृ. 145-150.
6. चन्द्र, के. आर., सामान्य प्राकृत भाषा में मध्यवर्ती त द, पृ. 151-156.
7. संयमधारी साधु में लेश्याएं-एक विवेचन, पृ. 157-160.

जनवरी-मार्च, 1992 (खण्ड-17, अंक-4)

1. सोलंकी, परमेश्वर, सप्तर्षियों से कालगणनाएँ, पृ. 179-192.
2. शर्मा, देवदत्त, हिन्दी काव्य में पंच महाव्रत, पृ. 193-196.
3. जैन, रमेश, जैन दर्शन और पाश्चात्य मनोविज्ञान की तुलना, पृ. 197-202.
4. विजय कुमार एवं किशनलाल, जैन संस्कृति का विराट् प्रतिबिम्ब- जैन कला दीर्घा, पृ. 203-206.
5. मुनि गुलाबचन्द, तैरापंथ का संस्कृत साहित्य : उद्भव और विकास, पृ. 207-214.
6. मुनि सुखलाल, आचार्य भिक्षु का राजस्थानी साहित्य, पृ. 215-218.
7. मुनि विमल कुमार, तीर्थंकरों के नामकरण का हेतु और उनका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ, पृ. 219-228.

अप्रैल-जून, 1992 (खण्ड-18, अंक-1)

1. मेलड़ा, महावीराज, जैन परम्परा के विकास में श्राविकाओं का योगदान, पृ. 1-2.
2. सोलंकी, परमेश्वर, पंच परमेष्ठिपद और अर्हन्त तथा अरिहन्त शब्द, पृ. 3-13.
3. आचार्यश्री तुलसी स्तुति, पृ. 14.
4. जैन, सागरमल, गुणस्थान सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास, पृ. 15-29.
5. उत्तराख्ययन के दो संदर्भ, पृ. 30.
6. कुमारी, सुनीता, जैन एवं जैनेतर राजनीति में दूत, पृ. 31-34.
7. शेखावत, राजवीरसिंह, जैन दर्शन : स्यादवाद पद्धति, पृ. 35-40.
8. पाण्डेय, हरिशंकर, अश्रुवीणा में बिम्ब योजना, पृ. 41-58.
9. मुनि सुखलाल, तैरापंथ का राजस्थानी साहित्य (2), पृ. 49.
10. मुनि गुलाबचन्द, तैरापंथ का संस्कृत साहित्य : उद्भव और विकास, पृ. 49-53.
11. पंत, कमला, षड् आस्तिक एवं बौद्ध दर्शनों में मान्य कर्मवाद से जैनसम्मत कर्मवाद की विशिष्टता, पृ. 54-62.

जुलाई-सितम्बर, 1992 (खण्ड-18, अंक-2)

1. सोलंकी, परमेश्वर, काल का स्वरूप और उसके अवयव, पृ. 79-86.
2. पंत, कमला, सांख्य दर्शन और गीता में प्रकृति - एक विवेचन, पृ. 87-92.
3. जैन, सागरमल, जटासिंहनन्दि का वराहगुचरित और उसकी परम्परा, पृ. 93-106.
4. गुप्त, केशवप्रसाद, 'वसंतविलास' में वर्णित ऐतिहासिक तथ्यों का महत्त्व, पृ. 107-116.
5. पाण्डेय, हरिशंकर, प्राकृत भाषा के कतिपय अवयव, पृ. 117-122.
6. शेखावत, राजवीरसिंह, "जैन द्रव्य सिद्धान्त" - परिचय और समीक्षा, पृ. 123-130.
7. मुनि विमल कुमार, जैन वाङ्मय में उपलब्ध लक्षियों के प्रकार, पृ. 131-144.
8. मलैया, आसालता, संस्कृत-शतकपरम्परा में आचार्य विद्यासागर के शतक एक परिचय, पृ. 145-150.
9. मुनि सुखलाल, तैरापंथ के आधुनिक राजस्थानी संत-साहित्यकार (3), पृ. 151-156.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1992 (खण्ड-18, अंक-3)

1. सोलंकी, परमेश्वर, सृष्टि-विज्ञान में जैन उल्लेखों का महत्त्व, पृ. 173-176.
2. जैन, सुरेश, चित्रलेखा, जैन, जीवों और पौधों के लुप्त होने की समस्या, पृ. 177-180.
3. जैन, प्रेमसुमन, कवि हरिजन कृत, प्राकृत मलयसुन्दरी धरियं, पृ. 181-188.
4. कुमार, रज्जन, अनुप्रेक्षा : विचारों का सम्यक् चिन्तन, पृ. 189-197.
5. लोक देवता और उनके वाद्य, पृ. 198.
6. श्रीवास्तव, ए. एल., जैन तीर्थंकरों का गजामिषेक, पृ. 199-205.

7. परमधर्म श्रुतिविहित अहिंसा, पृ. 206.
8. जैन, रत्नलाल, भाग्य को बदलने का सिद्धान्त, पृ. 207-212.
9. शर्मा, मनोहर, आचार्यश्री तुलसी की राजस्थानी भाषा-शैली, पृ. 213-218.
10. पाठक, विनीता, प्रमाण-मीमांसा के परिप्रेक्ष्य में प्रमाण के लक्षण, पृ. 219-222.
11. शेखावत, राजवीरसिंह, जैन प्रमाण-मीमांसा, में स्मृति प्रमाण, पृ. 223-235.
12. गांधीजी ने जैन जगत् को जगाया, पृ. 236.
13. मुनि गुलाबचन्द, तैरापंथ का संस्कृत साहित्य : उद्भव और विकास-3, पृ. 237-244.
14. पाण्डेय, हरिशंकर, उत्तराध्ययन सूत्र में प्रयुक्त उपमान : एक विवेचन, पृ. 245-246.

जनवरी -फरवरी, 1993 (खण्ड-18, अंक-4)

1. सोलंकी, परमेश्वर, वर्द्धमान ग्रन्थागार, लाडनू की प्रत् और ऋग्वेद का ग्रन्थाग्रः परिमान, पृ. 273-284.
2. पारख, जौहरीमल, जिनागमों का संपादन, पृ. 285-392.
3. पाण्डेय, हरिशंकर, रत्नपालचरित : एक साहित्यिक अनुशीलन, पृ. 393-308.
4. पुरोहित, सोहनकृष्ण, जिनसेनकृत हरिवंशपुराण में प्राचीन राजतंत्र का स्वरूप, पृ. 309-315.
5. कृष्णदत्त बाजपेयी- श्रद्धांजलि, पृ. 316.
6. मुनि गुलाबचन्द्र, तैरापंथ का संस्कृत साहित्य : उद्भव और विकास-4, पृ. 317-322.
7. पंत, कमला, न्याय-वैशेषिक, योग एवं जैन दर्शनों के संदर्भ में ईश्वर, पृ. 323-330.
8. समणी, स्थितप्रज्ञा, स्यादवाद : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में, पृ. 331-140.

जनवरी-मार्च, 1993 (खण्ड-19, अंक-1) मूल्यपरक-शिक्षा विशेषांक

1. धानवी, शिवरतन, मूल्य शिक्षा की एक शैक्षिक आधार दृष्टि, पृ. 131-138.
2. पांडेय, रामशकल, मूल्य शिक्षा एवं शिक्षा : एक विश्लेषण, पृ. 139.

अप्रैल-जून, 1993 (खण्ड-19, अंक-1) अध्यात्म और विज्ञान विशेषांक

1. युवाचार्य महाप्रज्ञ, अध्यात्म और विज्ञान, पृ. 1-5.
2. मेहता, कृष्णराज, आत्मज्ञान और विज्ञान का समन्वय, पृ. 6-9.
3. भार्गव, दयानन्द, विज्ञान पर आध्यात्मिक नियन्त्रण की आवश्यकता, पृ. 10-15.
4. भारती, बलभद्र, दीलतसिंह कोठारी (1906-1913) विज्ञान और अहिंसा का संगम, पृ. 16-20.
5. जैन, सागरमल, जैनधर्म और आधुनिक विज्ञान, पृ. 21-35.
6. सिंह, दशरथ, अध्यात्म और विज्ञान : परिसंवाद-प्रतिवेदन, पृ. 36-46.

जुलाई-सितम्बर, 1993 (खण्ड-19, अंक-2)

1. जैन, प्रेमसुमन, आचार्य कुन्दकुन्द और परवर्ती साहित्य, पृ. 49-58.
2. जैन, अशोक कुमार, आचार्य कुन्दकुन्द का अनेकान्त दर्शन, पृ. 59-68.
3. जैन, अनिल कुमार, दिगम्बर परम्परा में गौतम स्वामी, पृ. 69-76.
4. शुक्ल, चन्द्रकान्त, शाकाहार : शास्त्रीय पक्ष, पृ. 77-82.
5. शेखावत, राजवीर सिंह, जैन दर्शन में मांसाहार निषेध, पृ. 83-92.
6. दूगड, बच्छराज, जैन दर्शन में परिप्रेक्ष्य में निःशस्त्रीकरण और विश्वशांति, पृ. 93-100.
7. राय, अश्विनीकुमार और हरिशंकर पांडेय, कर्पूर मंजरी में सौंदर्य भावना, पृ. 101-114.
8. पारख, जौहरीमल, अपडिण्णो, पृ. 115-128.
9. राय, उपेन्द्रनाथ, हर्षचरित में कुछ राजवृत्त, पृ. 129-135.
10. राज, उपेन्द्रनाथ, मगध का मौर्यशासक शालिशूक, पृ. 136-140.
11. धन्दा, के. आर., जिनागमों का संपादन, पृ. 141-159.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1993 (खण्ड-19, अंक-3)

1. णमोकार-मंत्र में 'ण' वर्ण का महत्त्व, पृ. 165-168.
2. राणा, जगमहेन्द्रसिंह, जैन दर्शन में पंच परमेष्ठी का स्वरूप, पृ. 169-172.
3. शर्मा, गोपाल, अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द, पृ. 173-176.
4. राय, अश्विनीकुमार एवं हरिशंकर पांडेय, 'अश्रुवीणा' का गीतिकाव्यत्व, पृ. 177-190.
5. साध्वी श्रुतयज्ञा, जैन दर्शन में मोक्षवाद, पृ. 191-202.
6. साध्वी सिद्धप्रज्ञा, रात्रि भोजन-विरमण व्रत : विभिन्न अवधारणाएं, पृ. 203-206.
7. धोरडिया, निर्मला, समराइच्छकहा : एक धर्मकथा, पृ. 207-214.
8. पाण्डेय, हरिशंकर, महाकवि भिक्षु के क्रान्तिकारी आयाम, पृ. 215-220.
9. सोलंकी, परमेश्वर, विश्वशांति के पुरोधा : आचार्यश्री तुलसी, पृ. 221-222.
10. जैन सागरमल, जैन आगमों में हुआ भाषिक स्वरूप परिवर्तन, पृ. 223-250.
11. समणी स्थितप्रज्ञा, जीवन विज्ञान के प्रयोग : मनुष्य का क्रतापूर्ण आचरण बन्द हो सकता है?, पृ. 251-256.

जनवरी-मार्च, 1994 (खण्ड-19, अंक-4)

1. राय, अश्विनीकुमार, रत्नपालचरित में बिम्बात्मकता, पृ. 263-276.
2. गुप्त, केशव प्रसाद, जैन-संस्कृत वाङ्मय के ऐतिहासिक महाकाव्य, पृ. 277-290.
3. त्रिपाठी, कृष्णपाल, नाट्यदर्पण में मौलिक चिन्तन, पृ. 291-306.
4. पाण्डेय, हरिशंकर, प्रश्न-व्याकरण में अहिंसा का स्वरूप, पृ. 307-318.
5. प्रसाद, शिव, श्वेताम्बर-परम्परा का चन्द्रकुल और उसके प्रसिद्ध आचार्य, पृ. 319-344.
6. समणी चैतन्यप्रज्ञा, ध्यान-ह्रात्रिशिका में ध्यान का स्वरूप, पृ. 345-352.
7. समणी सत्यप्रज्ञा, कालूयशोविलास में चित्रात्मकता, पृ. 353-366.
8. समणी स्थितप्रज्ञा, आचार्यश्री महाप्रज्ञा का साधनादर्शन, पृ. 367-374.
9. धोरडिया, निर्मला, 'स्थानांग' में संगीत कला के तत्त्व, पृ. 375-388.

अप्रैल-सितम्बर, 1994 (खण्ड-20, पूर्णांक-90)

1. जैन, नंदलाल, कर्म और कर्मबंध, पृ. 9-21.
2. समणी मल्लिप्रज्ञा, अनेकांत दृष्टि का व्यापक उपयोग, पृ. 21-28.
3. जैन, जिनेन्द्र, भगवती आराधना के संदर्भ में मरण का स्वरूप, पृ. 29-36.
4. त्रिपाठी आनन्द प्रकाश, जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में पुरुषार्थ चतुष्टय, पृ. 37-46.
5. दूगड़, बच्छराज, पर्यावरण : एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण, पृ. 47-54.
6. चौबीसा, दिनेश चन्द्र, अभिज्ञानशाकुन्तल में गान्धर्व विवाह : एक समस्या, पृ. 55-56.
7. जोशी, जे.एन. एवं कमला घंत, भर्तृहरि और उनका विज्ञान शतक, पृ. 57-74.
8. शेखावत, राजवीर सिंह, कुन्दकुन्द के दर्शन में चारित्र का स्वरूप, पृ. 75-88.
9. जैन, अशोक कुमार, सुदर्शनोदय महाकाव्य का आधार दर्शन, पृ. 89-94.
10. पाण्डेय, हरिशंकर, श्रीमज्जयाचार्य विरचित चौबीसी : एक अनुशीलन, पृ. 95-106.
11. समणी कुसुमप्रज्ञा, निर्युक्ति के रचनाकार : एक विमर्श, पृ. 107-114.
12. सोलंकी, परमेश्वर, जैन साहित्य एवं इतिहास लेखन, पृ. 115-128.
13. समणी स्थितप्रज्ञा, संबोधि के आगमिक स्रोत, पृ. 129-142.
14. शर्मा, मुरारी, जैन योग और संगीत, पृ. 143-148.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1994 (खण्ड-20, पूर्णांक-91)

1. पुरोहित, रोहनकुण्ड, जैनधर्म में रथयात्रा महोत्सव, पृ. 153-156.
2. शर्मा, लाकेश्वर प्रसाद, रामस्नेही सन्त रामचरणजी पर भीखणजी का प्रभाव, पृ. 157-164.
3. झा, कुमुदनाथ, जैन दर्शन का अपरिग्रहवाद : आज की आवश्यकता, पृ. 165-170.
4. शेखावत, राजवीर सिंह, कुन्दकुन्द के दर्शन में उपयोग की अवधारणा, पृ. 171-176.
5. मुनि गुलाबचन्द्र, तैरापन्थ में प्राकृत-साहित्य का उद्भव और विकास, पृ. 177-192.
6. मुनि कामकुमार नन्दी, श्रुत-परम्परा, पृ. 193-196.
7. समणी चैतन्यप्रज्ञा, ध्यान-द्वात्रिंशिका- एक परिचय, पृ. 197-202.
8. जोशी, मुन्नी, मार्कण्डेय पुराण में देवी शक्ति का स्वरूप, पृ. 203-208.
9. जैन, अनिल कुमार, क्या अकाल मृत्यु सम्भव है?, पृ. 209-216.
10. पाण्डेय, हरिशंकर, श्रीमद्भागवतीय आख्यानों का विवेचन, पृ. 217-224.
11. दूगड़, बच्छराज, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और शांतिशोध, पृ. 225-230.
12. समणी स्थितप्रज्ञा, प्रेक्षाध्यान की वैज्ञानिकता, पृ. 231-236.
13. साध्वी संचितयशा, स्तुति के तत्त्व, पृ. 237-242.

जनवरी-मार्च, 1995 (खण्ड-20, पूर्णांक-92)

1. घौरडिया, निर्मला, स्थानांग-आगम, पृ. 261-264.
2. समणी प्रसन्नप्रज्ञा, भक्ति और आराध्य का स्वरूप, पृ. 265-272.
3. पाण्डेय, हरिशंकर, महाकवि महाप्रज्ञ का जीवन दर्शन, पृ. 273-288.
4. सिंह, प्रद्युम्नशाह, जैन दर्शन में लेश्या-एक विवेचन, पृ. 289-298.
5. घर, अनिलकुमार, अनेकान्तवाद व नयवाद का दार्शनिक स्वरूप, पृ. 299-308.
6. त्रिपाठी, आनंदप्रकाश, आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन में 'ईश्वर', पृ. 309-316.
7. समणी स्थितप्रज्ञा, 'संबोधि' में प्रयुक्त छन्द, पृ. 317-326.
8. सोलंकी, ऋग्वेद की मन्त्र-संख्या, पृ. 327-334.
9. सिन्हा, कुमुद, गांधीजी की शिक्षा में मूल्यपरक तत्त्व, पृ. 335-342.

अप्रैल-जून, 1995 (खण्ड-21, पूर्णांक-93)

1. जैन, नंदलाल, कुन्द-कुन्द की दृष्टि में आगम का स्वरूप, पृ. 1-10.
2. समणी मंगलप्रज्ञा, ज्ञान स्वरूप विमर्श, पृ. 11-26.
3. तिवारी, निर्मल कुमार, जैन तथा सांख्य दर्शनों में संज्ञान, पृ. 27-32.
4. समणी चैतन्यप्रज्ञा, 'भगवती' में सृष्टि तत्त्व-पंचास्तिकाय, पृ. 33-38.
5. साध्वी संचितयशा, दशवैकालिक और धम्मपद में भिक्षु, पृ. 39-44.
6. विजयरानी, 'तस्मान्न बध्यते' - एक विवेचन, पृ. 45-50.
7. दूगड़, बच्छराज, शांति-शिक्षा का स्वरूप और विकास, पृ. 51-58.
8. चौबीसा, दिनेश चन्द्र, 'उत्तर रामचरित' का सामाजिक चिन्तन, पृ. 59-64.
9. घर, अनिल, दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आन्दोलन, पृ. 65-78.

जुलाई-सितम्बर, 1995 (खण्ड-21, पूर्णांक-94)

1. कुमार, राजीव एवं आनंद कुमार, ब्राह्मणों की दार्शनिक मान्यताएं, पृ. 115-120.
2. जैन, प्रकाशचन्द्र, मानसुंग : भक्तामर स्तोत्र, पृ. 121-126.
3. साध्वी संचितयश, हरिकेशीय आख्यान, पृ. 127-134.
4. पाण्डेय, हरिशंकर, उपनिषद् और आचारांग, पृ. 135-150.
5. पंत, लज्जा, सारस्वत व्याकरण में समास, पृ. 151-158.
6. मुनि श्रीचंद, पंचसंधि की जोड़, पृ. 159-180.
7. ओझा, आर.के., दाम्पत्य जीवन और उत्तरदायित्व, पृ. 181-186.
8. दूगड, बच्छराज, संघर्ष निराकरण, पृ. 187-204.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1995 (खण्ड-21, पूर्णांक-95)

1. पटनी, सोहनलाल, ॐ नमः सिद्धन्, पृ. 235-244.
2. साध्वी जतनकुमारी, ओधनियुक्ति में उपधि, पृ. 245-250.
3. शर्मा, सुरेन्द्र, जैन दर्शन में शांति की अवधारणा, पृ. 251-260.
4. पाण्डेय, विनोद कुमार, जैनदर्शन में सल्लेखना, पृ. 261-266.
5. वेदालकार, रघवीर, 'वाक्पदीय' में काल की अवधारणा, पृ. 267-272.
6. राय, उपेन्द्रनाथ, मगध में काण्व-शासन, और युगपुराण, पृ. 273-280.
7. प्रसाद, शिव, काम्यकमच्छ, पृ. 281-284.
8. साध्वी संचितयश, पंच महाव्रत- एक संक्षिप्त विवेचन, पृ. 285-294.

जनवरी-मार्च, 1996 (खण्ड-21, पूर्णांक-96) कर्मवाद-विशेषांक

1. आचार्य तुलसी, कर्मवाद क्या है?, पृ. 1-8.
2. भार्गव, दयानन्द, कर्म सिद्धान्त के कतिपय सर्वमान्य पहलू, पृ. 9-12.
3. जैन, नंदलाल, जैन कर्मवाद : वैज्ञानिक मूल्यांकन, पृ. 13-22.
4. मुनि धर्मेश, कर्म बन्ध : एक जैव मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, पृ. 23-28.
5. मुनि सुखलाल, कर्म और जेनेटिक संरचना, पृ. 29-32.
6. मुनि महेन्द्रकुमार, जागतिक नियमों के संदर्भ में कर्मवाद, पृ. 33-38.
7. सोलंकी, परमेश्वर, मनुस्मृति और उसका कर्मफल-सिद्धान्त, पृ. 39-42.
8. साध्वी मुदितयश, हां! कर्म बदला जा सकता है, पृ. 43-50.
9. जैन, भागचन्द्र, जैन-बौद्ध दर्शन के कर्मवाद की कतिपय विशेषताएं, पृ. 51-56.
10. समणी मंगलप्रज्ञा, कर्म सिद्धान्त और श्रायोपशमिक भाव, पृ. 57-64.
11. समणी स्थितप्रज्ञा, संबोधि में 'कर्मवाद', पृ. 65-70.
12. समणी प्रतिभाप्रज्ञा, 'सूत्रकृतांग' में कर्म संबंधी चिन्तन, पृ. 71-78.

अप्रैल-जून, 1996 (खण्ड-22, पूर्णांक-97)

1. आचार्य महाप्रज्ञा, आर्ष भाषा : स्वरूप एवं विश्लेषण, पृ. 1-12.
2. नन्द, सुबोध कुमार, वैदिक क्रियापद : एक विवेचन, पृ. 13-24.
3. सिंह, सरस्वती, आख्यात एवं धातु का दार्शनिक स्वरूप, पृ. 25-28.
4. घोषसी, कमलेशकुमार छ., 'अविमारकम्' में प्रयुक्त प्राकृत-अव्ययवाद, पृ. 29-36.
5. शर्मा, जयचन्द्र, णमोकार महामंत्र : संगीतिक चिन्तन, पृ. 37-42.
6. पण्डित, प्रबोध वै., प्राकृत के प्राचीन बोली विभाग, पृ. 43-60.
7. बब्बी, कुमारी, मृच्छकटिक कालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 61-68.

8. मिश्र, मधुरिमा, भवभूति की दृष्टि में परिवार का स्वरूप, पृ. 69-72.
9. कुमार, संजय, बौद्ध दर्शन में स्मृति प्रस्थानों का महत्व, पृ. 73-78.
10. सोलंकी, परमेश्वर, आदि शाब्दिक और पारंपरीय प्राकृत, पृ. 79-87.
11. गणपतिसिंह, राव, सोलंकी-राजवंश का यायावरी इतिहास, पृ. 1-14.
12. मुनि श्रीचंद, मानव और देवताओं का कालमान, पृ. 15-20.
13. मुनि हड़मानमलजी, विक्रम संवत्सर में न्यूनाधिक मास, पृ. 21-28.
14. सोलंकी, परमेश्वर, झाबरा (पोकरण) की देवलियां, पृ. 29-32.
15. प्रतापसिंह, ओं सृष्टि संवत्, पृ. 33-38.
16. समणी कुसुमप्रज्ञा, दशवैकालिक निर्युक्ति, पृ. 1-16.

जुलाई-सितम्बर, 1996 (खण्ड-22, पूर्णांक-98)

1. अशोक, जैन तंत्र साहित्य, पृ. 89-90.
2. जैन, सुरेश, जैन धर्म एवं पर्यावरण, पृ. 91-96.
3. सचदेवा, सुभाषचन्द्र, अनेकान्तवाद की सार्वभौमिकता, पृ. 97-100.
4. शेखावत, राजवीरसिंह, वैदिक साहित्य में तत्त्व विचार, पृ. 101-120.
5. वर्मा, सुरेन्द्र, 'आयारो' में हिंसा-अहिंसा विवेक, पृ. 111-116.
6. मुनि श्रीचंद, वनस्पतियों में जीवेन्द्रिय संज्ञान, पृ. 117-120.
7. राय, रामदीप, कविराज राजशेखर रचित 'कर्पूर मंजरी', पृ. 121-126.
8. राय, उपेन्द्रनाथ, साहित्य लहरी के दो पद, 127-136.
9. समणी प्रसन्न प्रज्ञा, 'कर्पूरमंजरी' का सौन्दर्य निकष, पृ. 137-144.
10. पंत, लज्जा, 'रत्नावली' में अलंकार-सौन्दर्य, पृ. 145-154.
11. रावल, जयश्री, 'आषाढ़ का एक दिन' का कालिदास, पृ. 155-158.
12. मुनि दुलहराज, योगविशिका (आचार्य हरिमद्र), पृ. 1-8.
13. सोलंकी, परमेश्वर, रोडेराव की 'रउरवेल' का मूलपाठ, पृ. 9-20.
14. मुनि हड़मानमल, राजस्थानी कहावतें- एक संक्षिप्त संकलन, पृ. 21-44.
15. शर्मा, शक्तिधर, प्रमाणवाद और क्वांटम यान्त्रिकीय धारणाएं, पृ. 45-50.
16. 45 जैनागमों का सुवर्णाक्षरी मूलपाठ, पृ. 51-54.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1996 (खण्ड-22, पूर्णांक-99)

1. मुनि गुलाबचन्द्र, मनःपर्याय ज्ञान की संभव है?, पृ. 167-170.
2. मंगलाराम, अहिंसा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, पृ. 171-190.
3. मुनि सुखलाल, श्रुत-ज्ञान- एक मीमांसा, पृ. 191-194.
4. जैन, उदयचंद, आचार्य कुंदकुंद की काव्यकला, पृ. 195-204.
5. चन्दा, के. आर., 'प्रवचनसार' में छन्द की दृष्टि से पाठों का संशोधन, पृ. 205-210.
6. साध्वी विश्रुतयिमा, जिनकल्प की समाधारी, पृ. 211-216.
7. वियजराणी, वाल्मीकि-रामायण में दार्शनिक तत्व, पृ. 217-226.
8. शर्मा, मनोहर, राजस्थानी भाषा में खड़ी बोली का प्रयोग, पृ. 227-230.
9. पाण्डेय, हरिशंकर, 'णायकुमार चरित' का नायक, पृ. 231-236.
10. सोलंकी, परमेश्वर, साहित्य-सत्कार एवं पुस्तक-समीक्षा, पृ. 237-242.
11. सोलंकी, परमेश्वर, भारत में ईशानसीह का आगमन, पृ. 3-4.
12. बाली, चन्द्रकान्त, विक्रम संवत् : 36 ईसवी पूर्व, पृ. 5-10.
13. मुनि गुलाबचन्द्र, वेद और आगमकाल में पदाप्रथा, पृ. 11-16.
14. सोलंकी, परमेश्वर, वृद्धि नवकार मंत्र कल्प, पृ. 3-6.
15. मुनि श्रीचंद एवं झूमरमल बैगानी, नक्षत्र भोजन के मासपरक शब्दों का अर्थ, पृ. 7-18.
16. शर्मा, जयचंद्र, णमो सिद्धार्थ : नाद सौन्दर्य, पृ. 19-21.

जनवरी-मार्च, 1997 (खण्ड-22, पूर्णांक-100)

1. जैन, जिनेन्द्र, कर्म बंध और जैनदर्शन, पृ. 243-250.
2. त्रिपाठी, आनंद प्रकाश, उपनिषदों में कर्म का स्वरूप, पृ. 251-256.
3. पसाद, अतुलकुमार, अनुत्तरोपपातिकदशा की विषयवस्तु, पृ. 257-266.
4. समणी ऋजुप्रज्ञा, आत्म-परिमाण, पृ. 267-274.
5. जैन, नंदलाल, जीवन की परिभाषा और अकलंक, पृ. 275-286.
6. श्रीवास्तव, आनंदप्रकाश, एलौरा की जैन मूर्तियों का शिल्प शास्त्रीय वैशिष्ट्य, पृ. 287-294.
7. मुनि गुलाबचंद्र, काव्य के तत्त्व और परिभाषाएं, पृ. 295-302.
8. जोशी, सुनीता, उपमा-अलंकार के स्वरूप-लक्षण, पृ. 303-310.
9. समणी प्रसन्नप्रज्ञा, मनोविकास की भूमिकाएं, पृ. 311-314.
10. पाण्डेय, हरिशंकर, उपनिषद् और जैन धर्म के आत्मस्वरूप-चिंतन, पृ. 315-324.
11. ममता, कुमारी, वाल्मीकि-रामायण की रूमिला, पृ. 325-330.
12. सोलंकी, परमेश्वर, साहित्य-सत्कार एवं ग्रंथचर्चा, पृ. 331-335.
13. शर्मा, शक्तिधर, मास और राशियों का निर्धारण, पृ. 3-6.
14. सोलंकी, परमेश्वर, नवकुरुक्षेत्र निर्माण-प्रशस्ति, पृ. 7-14.
15. जैन, नीलम, जैन मैघदूतम् के रचनाकार- आचार्य मेरुतुंग, पृ. 15-18.
16. चतुर्वेदी, संदीपकुमार, शैव जैन तीर्थ : वटेश्वर, पृ. 19-22.

अप्रैल-जून, 1997 (खण्ड-23, पूर्णांक-101)

1. पाण्डेय, इन्दु, पर्यावरण विकास का अनिवार्य सोपान है, पृ. 1-6.
2. साध्वी स्वस्तिका, आचारांग में प्रेक्षाध्यान के सूत्र, पृ. 7-11.
3. कोठारी, मीणा एवं रामजी मीणा, प्राणायाम : एक आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण, पृ. 13-20.
4. जैन, भागचन्द्र, मध्ययुगीन जैन योग का क्रमिक विकास, पृ. 21-28.
5. पाण्डेय, हरिशंकर, उपनिषद् और जैन दर्शन में आत्म स्वरूप-चिन्तन (2), पृ. 29-38.
6. जोशी, सुनीता, शब्द शक्तियां- एक संक्षिप्त विवेचन, पृ. 39-52.
7. शर्मा, ब्रजनारायण, 'तत्पूर्वकम् अनुमानम्'- एक विश्लेषण, पृ. 53-58.
8. मंगलाराम, न्यायमिश्रित व्याकरण-परम्परा में श्री जयकृष्ण तर्कालंकार का योगदान, पृ. 59-92.
9. अमरसिंह, जैन परम्परा में स्तूप, पृ. 93-100.
10. श्रीवास्तव, शशिकला, ओसिया का महावीर मन्दिर और उसका वास्तुशिल्प, पृ. 101-108.
11. सोलंकी, परमेश्वर, प्राण, मन और इन्द्रियों में एकत्व साधने का योग : स्वर योग, पृ. 109-116.
12. दाधीच, सोहनलाल एवं परमेश्वर सोलंकी, जैन आगमों में वनस्पति वर्णन, पृ. 117-120.
13. सोलंकी, परमेश्वर, जैन कालगणना और तीर्थकर, पृ. 123-129.
14. त्रिवेद, देवसहाय, कल्की व सन्द्रकुपतम्, पृ. 131-134.
15. सोलंकी, परमेश्वर, हस्तिकुण्डली के दो जैन शिलालेख, पृ. 135-138.
16. प्रतापसिंह, भारतीय माप और दूरियां, पृ. 139-142.
17. बाठिया, हजारीमल, पुण्य श्लोक मुनि पुण्यविजयजी जन्मशती, पृ. 143-146.

जुलाई-सितम्बर, 1997 (खण्ड-23, पूर्णांक-102)

1. लोढ़ा, भोपालचंद, पर्यावरण सुरक्षा, जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में, पृ. 167-170.
2. सदयात, निशी, जैन दर्शन में सामाजिक न्याय, पृ. 171-176.
3. मुनि धर्मेश, जैन परंपरा में कायोत्सर्ग, पृ. 177-184.
4. मुनि विमलकुमार, तेरापंथ धर्मसंघ में प्राकृत भाषा के पठन-पाठन का संक्षिप्त इतिहास, पृ. 185-194.
5. पंत, लज्जा, रसभेद- एक समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 195-202.
6. जोशी, सुनीता, काव्य का निर्दुष्ट लक्षण?, पृ. 203-210.
7. जैन, अनिल कुमार, गुणस्थान तथा उनके आरोहण-अवरोहण का क्रम, पृ. 211-224.
8. प्रतापसिंह, 'सृष्टि' पर एक दृष्टिपात, पृ. 225-234.
9. तिवारी, रमाशंकर, कालिदास का 'रामगिर' कहाँ है?, पृ. 235-240.
10. शर्मा, जयचंद्र, मरुधरा के पेड़-पौधों में स्वरों का निवास, पृ. 241-244.
11. शर्मा, मनोहर, 'अहिंसा परमोधर्म' की एक लोकधा, पृ. 245-248.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1997 (खण्ड-23, पूर्णांक-103)

1. श्रीवास्तव, ए. एल., अष्टमांगलिक विह और उनके सामूहिक अंकन, पृ. 269-276.
2. समणी स्थितप्रज्ञा, जैन आगम एवं गीता में समत्व का स्वरूप, पृ. 277-284.
3. सचदेवा, सुभाषचन्द्र, उपनिषदों में जैन धर्म, पृ. 285-292.
4. पाण्डेय, विनोदकुमार, बौद्ध, जैन और वैदिक परम्परा में शील की अवधारणा, पृ. 293-298.
5. जैन, वीणा, 'अहिंसा' के विकास में भगवान् पार्श्वनाथ का योगदान, पृ. 299-304.
6. सिंघल, संगीता, 'पंचसमिति' - एक संक्षिप्त निरूपण, पृ. 305-310.
7. शर्मा, जयचंद्र, जैन समाज का भक्ति-संगीत, पृ. 311-314.
8. शर्मा, ब्रजनासायण, 'अर्थ' - एक अर्थ विश्लेषण, पृ. 315-324.
9. जैन, सागरमल, जैन आगमों की मूल भाषा : अर्धमागधी या शौरसेनी?, पृ. 325-348.
10. सोलंकी, परमेश्वर, जैन स्थापत्य के तीन भव्य जैन मंदिर, पृ. 349-352.
11. प्रतापसिंह, 1 को वै पुरुषस्य प्रतिमा, पृ. 353-358.
12. गर्ग, वेद प्रकाश, भट्टोत्पल : समय और रचनाएं, पृ. 359-366.
13. समणी चिन्मयप्रज्ञा, आगम सूत्रों की वर्तमान भाषा, पृ. 367-374.

जनवरी-मार्च, 1998 (खण्ड-23, पूर्णांक-104)

1. साध्वी विमलप्रज्ञा, निक्षेप-भाषा और विचार की वैज्ञानिक पद्धति, पृ. 379-384.
2. श्रीवास्तव, ए. एल., भारतीय लोक जीवन का मांगलिक प्रतीक-धापा, पृ. 385-396.
3. समणी मंगलप्रज्ञा, शरीर में अतीन्द्रिय ज्ञान के स्थान, पृ. 397-402.
4. साध्वी श्रुतयशा, धारणा : एक संक्षिप्त विमर्श, पृ. 403-412.
5. जैन, नंदलाल, जैन की सैद्धांतिक धारणाओं में क्रम परिवर्तन, पृ. 413-418.
6. मुनि श्रीचंद, जैन आगमों में ज्योतिष : एक पर्यालोचन, पृ. 419-436.
7. त्रिपाठी, आनंदप्रकाश, आचार्य कुंदकुंद की कृतियों में 'आत्मा', पृ. 437-442.
8. जैन, मुन्नो, जैन पद्य साहित्य में पार्श्वनाथ, पृ. 443-448.
9. पुरोहित, सोहन कृष्ण, राजस्थान में जैन मंदिरों की आर्थिक व्यवस्था, पृ. 449-454.
10. मुनि विमलकुमार, गुरुदेव के काव्यों में रस-परिपाक, पृ. 455-460.
11. पाण्डेय, हरिशंकर, आचार्य महाप्रज्ञ का सौन्दर्य दर्शन, पृ. 471-473.

अप्रैल-जुलाई, 1980 (खण्ड-6, अंक-1-4) निगन्धाचार-विशेषांक

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 1-2.
2. आचार्य तुलसी, आचार्य प्रवचन : धर्म : आत्मा का स्वभाव, पृ. 3-4.
3. आचार्य तुलसी, तेरापंथ की उद्भवकालीन स्थितियाँ, पृ. 5-18.
4. युवाचार्य महाप्रज्ञ, श्रीमज्जयाचार्यकृत 'आराधना' पृ.19-32.
5. टाटिया, नथमल, जैन श्रमणाचार, पृ. 33-45.
6. साध्वी यशोधरा, प्रायश्चित्त की एक विधा : परिहार तप, पृ. 46-50.
7. साध्वी अशोकश्री, पात्र-अपात्र : एक समीक्षा, पृ. 51-53.
8. मुनि महेन्द्रकुमार, प्रज्ञा और साधना के प्रकाशपुंज : श्रीमज्जयाचार्य, पृ. 54-58.

अगस्त-सितम्बर, 1980 (खण्ड-6, अंक-5, 6)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, साध्वी जिनप्रभा (संकलनकर्त्री), आचार्य प्रवचन : धर्म और संघ, पृ. 5.
3. मुनि नवरत्नमल, श्रीमज्जयाचार्य रचित 'झीणी चरवा' पृ. 6-8.
4. मुनि नवरत्नमल, इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों से : मुनिश्री खेतसी जी (सतयुगी), पृ. 9-12.
5. निजामुद्दीन, महावीर का अपरिग्रह : वर्तमान सन्दर्भों में, पृ. 13-17.
6. कर्णाबट, देवेन्द्रकुमार, नई चुनौती एवं नई दिशा : जयाचार्य शताब्दी और तुलसी निधि, पृ. 18-24.

अक्टूबर, 1980 (खण्ड-6, अंक-7)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, मुनि धर्मरुचि, आचार्य प्रवचन : समझौतावादी बनें, पृ. 5-6.
3. मुनि नवरत्नमल, श्रीमज्जयाचार्य रचित 'झीणी चरवा', पृ. 7-8.
4. मुनि नवरत्नमल, इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों से : मुनिश्री खेतसी जी (सतयुगी), पृ. 9-14.
5. जैन, जयकुमार, तीर्थंकर-चरित विषयक संस्कृत-साहित्य, पृ. 15-24.
6. नाहटा, भंवरलाल, सारंगकवि विरचित 'सुभाषित बत्तीसी' के संबंध में और नई सामग्री, पृ. 25-28.

नवम्बर, 1980 (खण्ड-6, अंक-8)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 1-3.
2. आचार्य तुलसी, मुनि धर्मरुचि (संकलनकर्ता), आचार्य प्रवचन : समझौतावादी बनें, पृ. 5-6.
3. मुनि नवरत्नमल, श्रीमज्जयाचार्य रचित 'झीणी चरवा', पृ. 7-11.
4. मुनि नवरत्नमल, इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों से : मुनिश्री खेतसी जी (सतयुगी), पृ. 12-18.
5. कोठारी, सोहनराज, एक अनाम विलक्षण नारी : अतीत के अंधेरे में, पृ. 19-21.

दिसम्बर, 1980 (खण्ड-6, अंक-9)

1. शास्त्री, फूलचंद, अंगश्रुत के परिप्रेक्ष्य में पूर्वगत श्रुत, पृ. 3-11.
2. उपाध्याय, जगन्नाथ, सांस्कृतिक संकट के बीच प्राकृतों की समस्या, पृ. 12-19.
3. जैन, सागरमल, आधुनिक मनोविज्ञान के सन्दर्भ में आचारांग सूत्र का अध्ययन, पृ. 20-31.
4. मेलड़ा, महावीरराज, अनाहारक अवस्था, पृ. 32-34.
5. जैन, लक्ष्मीचन्द, आगमों में गणितीय सामग्री और उसका मूल्यांकन, पृ. 35-69.
6. जैन, कमलेशकुमार, अनुयोगद्वार सूत्र में रस-विवेचन, पृ. 70-76.
7. जैन, कोमलचन्द, जैनागमों में नारी का स्थान, पृ. 77-84.
8. जैन, फूलचन्द, 'प्रेमी', अर्धमागधी-आगम साहित्य के परिप्रेक्ष्य में मूलाचार का अध्ययन, पृ. 85-92.

जनवरी, 1981 (खण्ड-6, अंक-10)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, मुनि धर्मरुचि (संकलनकर्ता), आचार्य प्रवचन : सम्यग्दृष्टिकोण, पृ. 5.
3. कुमार, हिमांशु, प्राचीन उत्तर बंग में जैन धर्म, पृ. 6-12.
4. नाहटा, अगरचंद, वाक कवि सारंग और उनकी रचनाएं, पृ. 13-15.
5. शर्मा, प्रेमलाल एवं शक्तिधर शर्मा, पुद्गल षट्त्रिंशिका : एक समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 16-19.

फरवरी, 1981 (खण्ड-6, अंक-11)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, मुनि धर्मरुचि (संकलनकर्ता), आचार्य प्रवचन : संघ-धर्म, पृ. 5-6.
3. भार्गव, दयानंद, जैन-आचार-मीमांसा : एक पुनर्मूल्यांकन, पृ. 7-14.
4. जैन, रमेशचन्द्र, बौद्ध-दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा : संस्कृत जैन ग्रन्थों के आधार पर, पृ. 15-23.

मार्च, 1981 (खण्ड-6, अंक-12) जैन विद्या परिषद् परिशिष्टांक

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, आचार्य प्रवचन : प्रवचन प्रभावना, पृ. 5-6.
3. नाहटा, अगरचंद, अप्रकाशित आगमिक साहित्य, पृ. 7-12.
4. भार्गव, दयानंद, आचारांग-सूत्र : एक मानवीय दृष्टिकोण, पृ. 13-17.
5. चोरडिया, श्रीचन्द्र, जैन आगमों में मोहनीय कर्म का स्वरूप, पृ. 18-35.
6. मुर्जिया, महावीर सिंह, भगवती-सूत्र का वैज्ञानिक अध्ययन, पृ. 36-40.
7. साध्वी यशोधरा, व्यवहार : एक पर्यवेक्षण, पृ. 41-56.
8. साध्वी अशोकश्री, आचारांग-दशा के परिप्रेक्ष्य में शिष्ट समाज की संरचना, पृ. 57-66.
9. प्रसाद, नन्दकिशोर, जैन-आगम विहित वर्षावास का पालि विनय-पिटक के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 67-72.

अप्रैल, 1981 (खण्ड-7, अंक-1)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 1-2.
2. मुनि धर्मरुचि, धैर्य पूर्वक पुरुषार्थ करें, पृ. 3-4.
3. प्रचण्डिया, महेन्द्र सागर, जैन हिन्दी काव्य में व्यवहृत संख्या-परक काव्य रूप, पृ. 5-9.
4. नाहटा, अगरचन्द्र, श्वेताम्बर जैन ग्रन्थों के प्रारम्भिक दो प्रकाशक, पृ. 10-12.

मई, 1981 (खण्ड-7, अंक-2)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, मुनि धर्मरुचि, आचार्य प्रवचन : श्वास-प्रेक्षा, पृ. 5-6.
3. जैन, रत्नलाल, सम्बोधि और श्रीमद्भगवद्गीता-एक समन्वय, पृ. 7-15.
4. साध्वी राजीमती, भिक्षु-जीवन ज्योति, पृ. 16.
5. साध्वी कानकुमारी, जैन ललित कला, पृ. 17-24.

जून-जुलाई, 1981 (खण्ड-7, अंक-3, 4)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, मुनि धर्मरुचि, संपिक्खए अप्पगमप्पएण, पृ. 5-6.
3. आचार्य रामकुमार जैन, रिष्टसमुच्चय में आयुर्वेद सम्बन्धी विषय, पृ. 7-15.
4. साध्वी कानकुमारी, जैन ललित कला, पृ. 16-23.
5. मुनि मांगीलाल, आचार्य : हिन्दी पद्यानुवाद, पृ. 24-27.

अगस्त-सितम्बर, 1981 (खण्ड-7, अंक-5, 6)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, मुनि धर्मरुचि, आचार्य प्रवचन : जैन धर्म का अहिंसा-दर्शन, पृ. 5-6.
3. जैन, कपूरचन्द, बीसवीं सदी का एक जैन संस्कृत नाटक, पृ. 7-9.
4. नाइट, अग्रचन्द, जयपाहुड-प्रश्नव्याकरण नामक एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ, पृ. 10-13.
5. साध्वी कानकुमारी, जैन ललित कला, पृ. 14-23.
6. मुनि मांगीलाल, आचार्य : हिन्दी पद्यानुवाद, पृ. 24-26.

अक्टूबर-नवम्बर, 1981 (खण्ड-7, अंक-7, 8)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, मुनि धर्मरुचि, आचार्य प्रवचन : संस्कारी महिला समाज का निर्माण, पृ. 5-7.
3. कोठारी, सोहनराज, श्रीमज्जिमाचार्य दिल्ली में, पृ. 8-11.
4. जैन, सागरमल, सत्ता कितनी वाच्य कितनी अवाच्य? जैन दर्शन के संदर्भ में, पृ. 12-19.
5. मुनि मांगीलाल, आचार्य : हिन्दी पद्यानुवाद, पृ. 20-24.
6. टाटिया, नथमल, स्ट्रासबुर्ग विद्वत्सम्मेलन, पृ. 25-27.

दिसम्बर-जनवरी, 1981-1982 (खण्ड-7, अंक-9, 10)

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, मुनि धर्मरुचि, आचार्य प्रवचन : मेरी आशा का केन्द्र : युवा-पीढ़ी, पृ. 5-6.
3. शर्मा, देवदत्त, आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों में जैन-तत्त्व-निरूपण, पृ. 7-15.
4. जैन, अशोककुमार, जैन दर्शन में अनेकान्तवाद, पृ. 16-20.
5. साध्वी कनकश्री, जैन साहित्य : नये सन्दर्भ, नयी दृष्टि, पृ. 21-31.
6. जैन, नरेन्द्रकुमार, स्याद्वाद, पृ. 32-36.
7. मुनि मांगीलाल, आचार्य : हिन्दी पद्यानुवाद, पृ. 37-39.
8. टाटिया, नथमल, स्ट्रासबुर्ग विद्वत्सम्मेलन, पृ. 40-45.

फरवरी-मार्च, 1982 (खण्ड-7, अंक-11, 12) जैन योग विशेषांक

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, आचार्य प्रवचन : परम कर्तव्य, पृ. 5-6.
3. युवाचार्य महाप्रज्ञ, जैन साधना-पद्धति एवं ध्यान, पृ. 7-62.
4. मुनि राकेशकुमार, आगम-साहित्य में योग के बीज, पृ. 63-68.
5. साध्वी सिद्धप्रज्ञा, उपासक प्रतिमा, पृ. 69-77.
6. साध्वी निर्वाणश्री, अनुप्रेक्षा : काव्यों में, पृ. 78-89.
7. साध्वी जतनकुमारी, उपलब्धियों के परिप्रेक्ष्य में योग, पृ. 90-96.
8. प्रचंडिया, राजीव, भारतीय योग-साधना में ध्यान, पृ. 97-104.
9. मुनि मांगीलाल, आचार्य : हिन्दी पद्यानुवाद, 105-107.

अप्रैल-जून, 1982 (खण्ड-8, अंक-1-3) जैन योग परिशिष्टांक

1. आचार्य तुलसी, स्वाध्याय और ध्यान, संकलनकर्ता-मुनि धर्मरुचि, पृ. 5-6.
2. टाटिया, नथमल, जैन परंपरा में योग, पृ. 7-27.
3. टाटिया, नथमल, (संपादन एवं अनुवाद), ध्यान-द्वात्रिंशिका (विश्लेषणात्मक अनुवाद), पृ. 28-40.

जुलाई-सितम्बर, 1982 (खण्ड-8, अंक-4-6) जैन दर्शन विशेषांक

1. वचन, आगम, वचन-बोधी, पृ. 3-4.
2. आचार्य तुलसी, आचार्य प्रवचन : निष्काम साधना, पृ. 5-7.
3. शास्त्री, फूलचन्द, जैन दर्शन का हार्द, पृ. 8-14.
4. मुनि मोहनलाल, अनेकान्वाद, पृ. 15-29.
5. साध्वी सिद्धप्रज्ञा, जिनकल्प : एक परिशीलन, पृ. 30-41.
6. मिश्र, मांगीलाल, कलिकालसर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द, पृ. 42-45.
7. जैन, अशोककुमार, जैनदर्शन में नयदृष्टि, पृ. 46-52.
8. जैन, कपूरचंद, संस्कृत जैन स्तोत्र साहित्य : एक विवेचन, पृ. 53-62.
9. सिंह, अरुणप्रताप, जैन एवं बौद्ध भिक्षुणियों का शिक्षा में योगदान, पृ. 63-70.
10. आचार्य राजकुमार जैन, आयुर्वेद में अनेकान्त की उपादेयता, पृ. 71-79.
11. शर्मा, ब्रह्मदत्त, आरोग्य-शोध-पीठ : एक दृष्टि में, पृ. 80-86.
12. मुनि मांगीलाल, आचार्य : हिन्दी पद्यानुवाद, पृ. 87-88.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1982 (खण्ड-8, अंक-7-9) योग पाठ्यक्रम विशेषांक

1. टाटिया, नथमल, आचार्य, पृ. 1-25.
2. टाटिया, नथमल, टाण, पृ. 26-111.

जनवरी-मार्च, 1983 (खण्ड-8, अंक-10-12)

उत्तरज्ज्ञयणाणि

1. छठ्विसाहस्रं अज्ज्ञयणं : पवण-माया, पृ. 1-2.
2. एगूणतीसहस्रं अज्ज्ञयणं : सम्मत-परक्कमे, पृ. 3-11.
3. तीसहस्रं अज्ज्ञयणं : तवमगई, पृ. 12-14.
4. बत्तीसहस्रं अज्ज्ञयणं : पमायड्डाणं, पृ. 15-21.
5. टिप्पण (1 से 70 तक), पृ. 22-68.

परिशिष्ट

1. मोक्खपाहुड, पृ. 70-76.
2. समयसार (प्रथम-अधिकार), पृ. 77-81.
3. हठयोगप्रदीपिका, पृ. 82-110.
4. मनोनुशासनम्, पृ. 111.

अप्रैल-जून, 1983 (खण्ड -9, अंक 1-3)

1. साध्वी सिद्धप्रज्ञा, जिनकल्प-एक परिशीलन, पृ. 1-11.
2. यादव, निखारीराम, जैन सप्तमंगी में अवक्तव्य और उसका स्वरूप, पृ. 12-20.
3. गेलड़ा, महावीरराज, जैन विद्या को पाश्चात्य विद्वानों का योगदान, पृ. 21-24.
4. मिश्र, मांगीलाल, जैन वैयाकरणों की यशस्वी परम्परा, पृ. 25-43.
5. वाजपेयी, आनन्द मंगल, भारतीय चिन्तन परम्परा में जैनो का योगदान, पृ. 44-51.
6. मुनि मांगीलाल 'मुकुल', आचार्य : हिन्दी पद्यानुवाद, पृ. 52-54.
7. नाहटा, अगरचन्द, साहित्य समीक्षा, पृ. 55-56.

जुलाई-सितम्बर, 1983 (खण्ड-9, अंक-4-6)

1. युवाचार्य महाप्रज्ञ, जैन साहित्य के आलोक में गीता का अध्ययन, पृ. 1-7.
2. जैन, राका, जीवनधर चम्पू का चम्पूकाव्यत्व, पृ. 8-17.
3. सिंह, भगवन्त, जैन दर्शन एवं अद्वैत वेदान्त : एक तुलनात्मक विवेचन, पृ. 18-22.
4. जैन, सागरमल, ज्ञान और कथन की सत्यता का प्रश्न : जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में, पृ. 23-32.
5. आरुषोपा, पुरुषोत्तम, मुनि रामसिंह का रहस्यवाद, पृ. 33-38.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1983 (खण्ड-9, अंक-7-9)

8. उत्सेधमान : एक मूल्यांकन, पृ. 1-17.
9. साध्वी निर्वाणश्री एवं समणी कुसुमप्रज्ञा, जैन आगम-साहित्य में आहार, पृ. 18-30.
10. जैन, कैलाशचन्द, आधुनिक जन-जीवन में सत्य महाव्रत का महत्त्व : दशवैकालिकसूत्र के आधार पर, पृ. 31-37.

जनवरी-मार्च, 1984 (खण्ड-9, अंक-10-12)

1. मुनि चन्दन, उत्सेधमान : एक मूल्यांकन (उत्तर भाग), पृ. 1-12.
2. साध्वी निर्वाणश्री एवं समणी कुसुमप्रज्ञा, जैन आगम-साहित्य में आहार (उत्तर भाग), पृ. 13-24.

अप्रैल-जून, 1984 (खण्ड-10, अंक-1)

1. राम, रामदेव, केवलज्ञान, पृ. 1-5.
2. दिगे, अर्हदास ब., पातंजल योग और जैन योग, पृ. 6-11.
3. जैन, राका, महाकवि हरिचन्द्र और उनका समय, पृ. 12-20.
4. घोषडा, पूनमचन्द, वीर-निर्वाण अमावस्या को धूमकेतु का उदय, पृ. 21-28.
5. समणी कुसुमप्रज्ञा, जैन मुनि की चर्या, पृ. 29.

जुलाई-सितम्बर, 1984 (खण्ड-10, अंक-2)

1. टाटिया, नथमल, जैन धर्म एवं समाज-व्यवस्था, पृ. 1-3.
2. मिश्र, मांगीलाल, जीवन की सत्ता-मीमांसा पर जैन और बौद्धमत, पृ. 4-10.
3. साधक, शरद कुमार, खिलाकर खुश होने वाली सम्यता, पृ. 11-26.
4. जैन, नेमीचन्द, नारी-जीवन के महावीरकालीन संदर्भों का पर्यवलोकन एवं समीक्षण, पृ. 27-32.
5. मुनि नवरत्नमल, महातपस्वी मुनिश्री हुलासमलजी (लाडनू), पृ. 33-36.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1984 (खण्ड-10, अंक-3)

1. कासलीवाल, कस्तूरचंद, हिन्दी जैन-काव्यों में समाज दर्शन, पृ. 1-5.
2. साध्वी सिद्धप्रज्ञा, संघम की सीमा-रेखा : स्थितिकल्प, पृ. 6-14.
3. घोषडा, पूनमचन्द, इतिहास की एक विस्तृत घटना : एक प्रत्यक्षदर्शी की जुबानी, पृ. 15-25.
4. मिश्र, मांगीलाल, जैन-न्यायशास्त्र के आधाररतम्भ, पृ. 26-30.

जनवरी-मार्च, 1985 (खण्ड-10, अंक-4)

1. समणी कुसुमप्रज्ञा, निर्युक्ति और भाष्य का पृथक्करण : एक प्रारम्भिक प्रयत्न, पृ. 31-38.
2. जैन, लालचंद, पातंजल-योग और जैन-योग : एक तुलनात्मक विवेचन, पृ. 39-48.
3. जैन, नरेन्द्र कुमार, धर्मध्यान का स्वरूप एवं भेद, पृ. 49-51.
4. रामदेव, कैवल्यतत्त्व, पृ. 52-58.
5. भानावत, शान्ता, जैन धर्म में नारी का स्थान, पृ. 59.

अप्रैल-जून, 1985 (खण्ड-11, अंक-1)

1. समणी स्थितप्रज्ञा, विभिन्न ध्यान-पद्धतियों के परिप्रेक्ष्य में प्रेक्षा-प्रयोग और परिणाम, पृ. 1-8.
2. कोठारी, सोहनराज, जाति-स्मरण विधा की पृष्ठभूमि में अनुभूत जीवन (जन्म-जन्मांतर का साथ) पृ. 9-15.
3. जैन, लालचन्द, पातंजल-योग और जैन-योग : एक तुलनात्मक विवेचन, पृ. 16.

जुलाई-सितम्बर, 1985 (खण्ड-11, अंक-2)

1. साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा, उपनिषदों पर श्रमण-संस्कृति का प्रभाव, पृ. 1-7.
2. मुनि महेन्द्रकुमार, जैन-दर्शन, पाश्चात्य दर्शन और विज्ञान में आकाश और काल, पृ. 8-22.
3. टाटिया, नथमल, ध्यान-द्वात्रिंशिका, पृ. 23-35.
4. समणी कुसुमप्रज्ञा, महापरिज्ञा अध्ययन और उसकी निर्युक्ति, पृ. 36.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1985 (खण्ड-11, अंक-3)

1. समणी कुसुमप्रज्ञा, गोविंदनिर्युक्ति और निर्युक्तिकार, पृ. 1-2.
2. जैन, अनुपम एवं सुरेशचन्द्र अग्रवाल, जैन गणितीय साहित्य, पृ. 3-16.
3. मुनि चन्दन, श्रमण भगवान् महावीर के दैविक उपसर्ग : एक अनुशीलन, पृ. 17-27.
4. प्रचण्डिया, आदित्य, कविवर जिनहर्ष द्वारा प्रयुक्त प्रमुख काव्य-रूप, पृ. 28-38.

जनवरी-मार्च, 1986 (खण्ड-11, अंक-4)

1. समणी स्थितप्रज्ञा, जीव और पुद्गल का संबंध, पृ. 1-4.
2. जैन, प्रेमसुमन, भगवतीसूत्र में प्रतिपादित धार्मिक उदारता, पृ. 5-14.
3. जैन, कमलेश कुमार, श्रमण परम्परा में संवर : भगवतीसूत्र के संदर्भ में, पृ. 15-27.
4. रावका, प्रेमचन्द, जैन दर्शन में शरीर निरूपण, पृ. 28.
5. मेहता, चन्दनराज, भगवती-जोड़ में पंचपरमेष्ठी तत्त्व, पृ. 29-34.
6. जैन, पी.सी. जगाली और उनका बहुरतवाद, पृ. 35-43.
7. गेलड़ा, महावीरराज, क्या चन्द्रमा में देवता है?, पृ. 44-48.
8. दुवे, लक्ष्मीनारायण, ज्ञान-विज्ञान का विश्वकोश : जैनागम भगवतीसूत्र, पृ. 49-51.
9. प्रचण्डिया, आदित्य, जैन हिन्दी काव्य में 'गुणस्थान', पृ. 52-56.
10. साध्वी मधुस्मिता, भगवती सूत्र में मैत्री के तत्त्व और प्रयोग, पृ. 57-59.
11. मुनि श्रीचन्द, पर्व-तिथियों में हरियाली खाने का निषेध क्यों?, पृ. 60-61.
12. मुनि सुखलाल, हिंसा अहिंसा की नई कसौटी- प्रदूषण, पृ. 78-81.
13. साध्वी कल्पलता, देववाद के वातावरण में असहेज्ज का उदात्त स्वर, पृ. 82-84.
14. साध्वी निर्वाणश्री, लोकस्थिति के मूल तत्त्व और प्रदूषण, पृ. 85-88.
15. जैन, डी.सी., जैन विद्या परिषद् के अधिवेशन का प्रतिवर्दन, पृ. 89.

अप्रैल-जून, 1986 (खण्ड-12, अंक-1)

1. मुनि महेन्द्र कुमार एवं जेठालाल झवेरी, भगवती सूत्र का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन, पृ. 1-12.
2. साध्वी सिद्धप्रज्ञा, परपर्याय की अपेक्षा से नास्तित्व : स्रोत की खोज, पृ. 13-16.
3. समणी कुसुमप्रज्ञा, गर्भ-प्रज्ञप्ति, पृ. 17-34.
4. समणी मुदितप्रज्ञा, भगवती में परामनोविज्ञान, पृ. 35-38.
5. साध्वी अशोकश्री, माहण शब्द : एक विमर्श, पृ. 39-42.
6. साध्वी जिनप्रज्ञा, महावीर चौबीसवें तीर्थंकर क्यों?, पृ. 43-48.

7. मुनि धनंजयकुमार, सार्वभौम धर्म का घोषणा-पत्र, पृ. 49-52.
8. समणी सुप्रज्ञा, सुख-दुःख की अवधारणाएं, पृ. 53-55.
9. समणी अक्षयप्रज्ञा, देवता भी बूढ़े होते हैं, पृ. 56-57.
10. मुनि मुदितकुमार, आगम की व्याख्या-पद्धति और नयवाद, पृ. 58-59.
11. मुनि राजेन्द्रकुमार, क्या आत्मा शरीर परिमाण है?, पृ. 60-63.
12. जैन, फूलचन्द्र, भगवती में उल्लिखित पार्श्वरथ और पार्श्वपत्नीय श्रमण परम्परा, पृ. 64-69.

जुलाई-सितम्बर, 1986 (खण्ड-12, अंक-2)

1. मुनि श्रीचन्द्र, प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में ज्योतिष-विद्या, पृ. 24-29.
2. मुनि प्रशान्तकुमार, ज्ञान और चरित्र का संबंध, पृ. 30-31.
3. जैन, अनुपम एवं सुरेशचन्द्र अग्रवाल, जैन गणितीय साहित्य, पृ. 32-42.
4. प्रवण्डिया, आदित्य, अपभ्रंश वाङ्मय में भगवान् पार्श्वनाथ, पृ. 43-49.
5. नाहटा, किरण, उपदेश-रत्न-कथा कोश, पृ. 50-57.
6. मुनि चन्दन, भगवान् महावीर के दैविक उपसर्ग, पृ. 58.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1986 (खण्ड-12, अंक-3)

1. मुनि राजेन्द्रकुमार, भगवान् महावीर का सिद्धान्त : कज्जमाणे कडे, पृ. 1-3.
2. जैन, अनिल कुमार, जैन-धर्म में जीव विज्ञान, पृ. 4-10.
3. सिंह, सुरेन्द्र पाल, भारतीय वाङ्मय में जैनाचार्यों का योगदान, पृ. 11-16.
4. मुनि श्रीचन्द्र, पर्युषण कल्प, पृ. 17-23.
5. समणी कुसुमप्रज्ञा, दशवैकालिक निर्युक्ति : एक अनुचिंतन, पृ. 24-29.
6. झा, परमेश्वर, जैनाचार्यों की गणितीय एवं ज्योतिष सम्बन्धी कृतियां : एक सर्वेक्षण, पृ. 30-41.
7. मेहता, मोहनलाल, जैन पारिभाषिक पद, पृ. 42-46.

जनवरी-मार्च, 1987 (खण्ड-12, अंक-4)

1. मुनि राजेन्द्रकुमार एवं मुनि मुदितकुमार, भगवतीसूत्र तथा सन्मति-तर्क-प्रकरण में नयवाद, पृ. 1-4.
2. मुनि श्रीचन्द्र, अतीत की भाषा में अतीत को पढ़ें, पृ. 5-6.
3. साध्वी यशोधरा, धर्मचक्र-प्रवर्तन, पृ. 7-11.
4. साध्वी सिद्धप्रज्ञा एवं साध्वी निर्वाणश्री, आवश्यक नियुक्ति एवं मूलाचार का षडावश्यकधिकार : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 12-17.
5. समणी अक्षयप्रज्ञा, उपनिषद् और जैन आगम का शब्द व सिद्धान्त-साम्य, पृ. 18-20.
6. समणी कुसुमप्रज्ञा, निर्युक्ति साहित्य में कथा, पृ. 21-32.
7. भार्गव, दयानन्द, विरोधी हिंसा तथा धर्मरक्षार्थजा हिंसा, पृ. 33-36.
8. जैन, गोकुलचन्द्र, कायोत्सर्ग का प्रायोगिक अध्ययन, पृ. 37-39.
9. जैन, अनिलकुमार, रक्कथ के भेद : एक समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 40-42.
10. जैन, प्रेमसुमन, महाकवि पुष्पदन्त का भाषात्मक अवदान, पृ. 43-50.
11. दूगड़, बच्छराज, ज्ञान मीमांसीय प्रत्ययवाद, पृ. 51-56.
12. जैन, अनुपम एवं सुरेशचन्द्र अग्रवाल, जैन आगमों में निहित गणितीय अध्ययन के विषय, पृ. 57-64.
13. मेहता, मोहनलाल, जैन पारिभाषिक पद, पृ. 65-67.

अप्रैल-जून, 1987 (खण्ड-13, अंक-1)

1. मुनि श्रीचंद, बाह्यतप के परिणामों का वर्णन, पृ. 1-3.
2. समणी चिन्मयप्रज्ञा, संघ-सेवा और वैद्यावृत्त्य, पृ. 4-7.
3. साध्वी अशोकश्री, आचारदशा-एक अनुचितन, पृ. 8-14.
4. समणी कुसुमप्रज्ञा, निर्युक्ति साहित्य में कथा, पृ. 15-26.
5. साध्वी यशोधरा, शिवाम्बु चिकित्सा और मोयपडिमा, पृ. 27-30.
6. शर्मा, शक्तिधर, जैन-ज्योतिष-विज्ञान, पृ. 31-35.
7. जैन, अनुपम एवं सुरेशचन्द्र अग्रवाल, जैन आगमों में निहित गणितीय अध्ययन के विषय, पृ. 36-50.
8. दूगड, बच्छराज, प्रतीत्य-समुत्पाद, पृ. 51.
9. मेहता, मोहनलाल, जैन पारिभाषिक पद, पृ. 51-55.

जुलाई-सितम्बर, 1987 (खण्ड-13, अंक-2)

1. साध्वी अशोकश्री, आचारदशा-एक अनुचितन, पृ. 1-4.
2. साध्वी मंगलप्रभा, विद्यय-ध्यान और अनुप्रेक्षा, पृ. 5-10.
3. दूगड, बच्छराज, वेदों में अतीन्द्रिय ज्ञान-मीमांसा, पृ. 11-24.
4. जैन, फूलचन्द, जैन परम्परा में आचार्य परमेश्वरी का स्वरूप विवेचन, पृ. 25-30.
5. जैन, भागचन्द, जैन-बौद्ध ध्यान-साधना, पृ. 31-37.
6. शामसुखा, बुद्धमल, पुनर्जन्म की सिद्धिका, पृ. 37-40.
7. शर्मा, ब्रजनाथरायण, वैदिक, बौद्ध और जैन धर्म का तृतीय आयाम-अदत्तादान विरमण (अस्तेय की सार्थकता), पृ. 41-46.
8. प्रचण्डिया, आदित्य, अपभ्रंश के जैनाचार्य जिनदत्त सूरि का साहित्यिक अवदान, पृ. 47-50.
9. मेहता, मोहनलाल, जैन पारिभाषिक शब्द, पृ. 51-52.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1987 एवं जनवरी-मार्च, 1988 (खण्ड-13, अंक-3-4)

आयारो संगोष्ठी विशेषांक

1. टाटिया, नथमल, आयारो संगोष्ठी- प्रतिवेदन, पृ. 1-3.
2. मुनि महेंद्रकुमार, क्या षड्जीविकाय मूलतः आदिमकालीन अवधारणा है?, पृ. 4-8.
3. मुनि राजेन्द्रकुमार, लोकविजय अथवा लोकविचय, पृ. 7-11.
4. मुनि मुदितकुमार, आचारांग भाष्य की नवीन अवधारणाएं, पृ. 12-15.
5. मुनि उदितकुमार, आचारांग के सन्दर्भ में सुप्त और जागृत की चिन्तनधारा, पृ. 16-19.
6. मुनि धनंजयकुमार, धृतवाद-निर्जरा के प्रयोग, पृ. 20-25.
7. मुनि प्रशान्तकुमार, आचारांग में आत्मा का स्वरूप, पृ. 26-27.
8. साध्वी विमलप्रज्ञा, आयारो- आचार्य भिक्षु की अहिंसा की कसौटी, पृ. 28-31.
9. साध्वी निर्वाणश्री, आयारो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) के जैकोवीकृत भाषान्तर का समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 32-37.
10. समणी कुसुमप्रज्ञा, महापरिज्ञा अध्ययन- एक विमर्श, पृ. 38-42.
11. समणी मंगलप्रज्ञा, धृताध्ययन- एक परिशीलन, पृ. 43-45.
12. समणी मल्लिप्रज्ञा, आयारो में भावना-योग, पृ. 46-56.
13. गेलड़ा, महावीरराज, आयारो और विज्ञान, पृ. 57-59.
14. शामसुखा, बुद्धमल, आयारो में पुनर्जन्म सिद्धान्त, पृ. 60-67.
15. भार्गव, दयानन्द, आचारांग में ज्ञानाधार, पृ. 68-74.
16. रामजीसिंह, आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के सन्दर्भ में आयारो की सार्थकता, पृ. 75-79.

17. टाटिया, नधमल, लोक-विज्ञान अध्ययन में धर्मध्यान के तत्त्व, पृ. 80-89.
18. जैन, प्रेमसुमन, आचारांग के व्याख्या-साहित्य में वर्णित कथाएं, पृ. 90-106.
19. जैन, विमलप्रकाश, आचार्य के प्रथम दो अध्ययनों में प्रयुक्त त्रिष्टुप् छन्द के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन, 107-114.
20. चन्द्रा, के. आर., आचार्य (प्रथम श्रुतस्कन्ध) की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन, पृ. 115-117.
21. जैन, भागचन्द्र, आचार्य और पालि त्रिपिटक, पृ. 118-128.

अप्रैल-जून, 1988 (खण्ड-14, अंक-1)

1. मुनि राकेश कुमार, ड्राई हजार वर्ष पूर्व के स्फुट दार्शनिक वाद, पृ. 1-6.
2. साध्वी कनकश्री, महावीर की अनुशासन-शैली- एक विमर्श, पृ. 7-13.
3. साध्वी विमलप्रज्ञा, कर्मफल भोगता अनिवार्य, पृ. 14-16.
4. वाजपेयी, आनन्द मंगल, 'धम्मपद' एवम् 'आचार्य' में प्रतिपादित आचार, पृ. 17-26.
5. जैन, भागचन्द्र, जैन-बौद्ध ध्यान-साधना, पृ. 27-34.
6. समणी मंगलप्रज्ञा, इन्द्रिय-प्रत्यक्ष प्रक्रिया : जैन एवं बौद्ध परम्परा, पृ. 35-37.
7. दूगड, बच्छराज, भारतीय दर्शन में मन, पृ. 38-49.
8. साध्वी अशोकश्री, व्याख्या-ग्रन्थ- एक परिचय, पृ. 50-52.
9. साध्वी विमलप्रज्ञा, आचार्य भिक्षु की अहिंसा की कसौटी, पृ. 53-57.
10. मेहता, मोहनलाल, जैन पारिभाषिक शब्द, पृ. 58-59.

जुलाई-सितम्बर, 1988 (खण्ड-14, अंक-2)

1. मुनि महेन्द्रकुमार, क्या षड्जीविकायावाद मूलतः आदिमकालीन अवधारणा है?, पृ. 1-6.
2. साध्वी राजीमती, क्या अध्यात्म-साधना और अनुशासन का अनुबन्ध है?, पृ. 7-10.
3. साध्वी कनकश्री, महावीर की अनुशासन शैली : एक विमर्श, पृ. 11-17.
4. समणी मधुरप्रज्ञा : भिक्षावृत्ति- पशु-पक्षियों के नाम पर क्यों? पृ. 18-21.
5. प्रचण्डिया, आदित्य, 'भरतेस्वर बाहुबलीरास' की भाषा, पृ. 22-27.
6. जन, विनयकुमार, द्रविड संख्या का आर्थिक आधार : संस्कृत, पृ. 28-32.
7. जैन, कमलेश, जैन पारिभाषिक शब्दों का अध्ययन, पृ. 33-37.
8. साध्वी अशोकश्री, व्याख्या ग्रन्थ- एक परिचय, पृ. 38-41.
9. दूगड, बच्छराज, परिवर्तन की समस्या, पृ. 42-49.
10. मेहता, मोहनलाल, जैन पारिभाषिक शब्द, पृ. 50-52.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1988 (खण्ड-14, अंक-3)

1. समणी कुसुमप्रज्ञा, निर्युक्ति-साहित्य में निक्षेप एवं छंद-योजना, पृ. 1-4.
2. साध्वी कनकश्री, जैन आगम साहित्य, पृ. 5-14.
3. सुथार, गणेशीलाल, सुधमा जैन, जैनन्यायसम्मत ईहा का समीक्षात्मक विवेचन, पृ. 15-20.
4. प्रचण्डिया, आदित्य, हिन्दी साहित्य पर अपभ्रंश का प्रभाव, पृ. 21-25.
5. जैन, प्रेमसुमन, कवि हरिराजकृत प्राकृत मलयसुन्दरीचरियं, पृ. 26-33.
6. जैन, रतनलाल, जैन-दर्शन और योग-दर्शन में कर्म-सिद्धान्त, पृ. 34-41.
7. साध्वी अशोकश्री, शिष्ट समाज की संरचना, पृ. 42-46.

जनवरी-मार्च, 1989 (खण्ड-14, अंक-4)

1. सुधार, गणेशीलाल एवं सुधमा जैन, जैनन्यायसम्मत ईहा का समीक्षात्मक विवेचन, पृ. 1-6.
2. जैन, रत्नलाल, जैन-दर्शन और योग-दर्शन में कर्म-सिद्धान्त, पृ. 7-13.
3. सहल, नागरमल, उपनिषदों में अनुशासन, पृ. 14-20.
4. जोशी, कमला, जैन-दर्शन में बाह्य तप-साधना का स्वरूप, पृ. 21-29.
5. कासलीवाल, करतूरचन्द, संस्कृत-साहित्य के विकास में जैनाचार्यों का योगदान, पृ. 30-38.
6. समणी कुसुमप्रज्ञा, आचारांग : एक परिचय, पृ. 37-42.

अप्रैल-जून, 1989(खण्ड-15, अंक-1)

1. साध्वी अशोकश्री, आचार्य पद- एक कसौटी, पृ. 1-5.
2. समणी कुसुमप्रज्ञा, स्थिरीकरण के सूत्र, पृ. 6-10.
3. जोशी, कमला, जैनसम्मत तटस्थ अवलोकन- रूपसाधना, पृ. 11-14.
4. जैन, जिनेन्द्र कुमार, दशवीं शताब्दी के जैन काव्यों में प्रतिपादित सांख्यदर्शन, पृ. 15-21.
5. जैन, सुधमा, जैनन्यायसम्मत स्मृति, प्रत्यभिज्ञा और तर्क प्रमाणों का अनुशीलन, पृ. 22-27.
6. जैन, अमरप्रकाश, प्राचीन ग्रंथों में पाट, वर्ण और ताल, पृ. 28-29.
7. प्रचण्डिया, आदित्य, अपभ्रंश वाङ्मय का ऐतिहासिक महत्त्व, पृ. 30-34.
8. साध्वी योगक्षेमप्रभा, आचारांग : ध्यान-साधना के परिप्रेक्ष्य में, पृ. 35.
9. मिश्र, विश्वनाथ, अहमर्थ-विचार, पृ. 36-41.

जुलाई-सितम्बर, 1989 (खण्ड-15, अंक-2)

1. साध्वी अशोकश्री, अनिवर्चनीय समाधि की प्रक्रिया, पृ. 1-4.
2. आनन्द, अरुणा, जैनदर्शन और आचार : योगदर्शन के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में, पृ. 5-10.
3. मेहता, संगीता, जैन संस्कृत स्तोत्र-साहित्य : उद्भव एवं विकास, पृ. 11-17.
4. मिश्र, मांगीलाल, श्रमण युग में जातीयता की स्थिति, पृ. 18-22.
5. जैन, रत्नलाल, जैन-बौद्ध-दर्शनों में कर्म का स्वरूप, पृ. 23-24.
6. शर्मा, ब्रजनारायण, तत्पूर्वक अनुमानम्, पृ. 25-30.
7. सिन्हा, सच्चिदानन्द, द्वारा दीक्षान्त अभिभाषण, पृ. 31-34.
8. मिश्र, विश्वनाथ, वाक्-तत्त्व, पृ. 35-40.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1989 (खण्ड-15, अंक-3)

1. साध्वी अशोकश्री, संकल्प-ऊर्जा के स्रोत, पृ. 1-3.
2. समणी कुसुमप्रज्ञा, स-भिक्षू अध्ययन : एक विमर्श, पृ. 4-8.
3. आनन्द, अरुणा, जैनदर्शन और आचार : योगदर्शन के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में, पृ. 9-14.
4. जोशी, कमला, जैन-सम्मत शुक्लध्यान एवं पातंजलयोग की समाधि का तुलनात्मक स्वरूप, पृ. 15-20.
5. दूगड़, बच्छराज, परामनोविज्ञान तथा भारतीय दर्शन के अतीन्द्रिय ज्ञान की अवधारणा की तुलना, पृ. 21-32.
6. जैन, रत्नलाल, कर्म की विधिव्रता- मनोविज्ञान की भाषा में, पृ. 33-37.
7. मुनि श्रीचंद एवं झूमरमल बैंगानी, आगमीय वनस्पतियों की पहचान, पृ. 38-47.

जनवरी-मार्च, 1990 (खण्ड-15, अंक-4)

1. साध्वी अशोकश्री, कल्पसूत्र : एक पर्यवेक्षण, पृ. 1-6.
2. साध्वी निर्वाणश्री, संस्कृत साहित्य का आधुनिक साहित्य के संदर्भ में मूल्यांकन, पृ. 7-10.
3. जैन, आचार्य राजकुमार महर्षि घरक की अनेकान्त सम्बन्धी अवधारणा, पृ. 11-16.
4. जोशी, कमला, पुनर्जन्म-प्राचीन दार्शनिकों की दृष्टि में, पृ. 17-20.
5. मेहता, संगीता, जैन संस्कृत रत्नोत्र साहित्य : उद्भव एवं विकास, पृ. 21-26.
6. जैन, अमय प्रकाश, 108 का माहात्म्य, पृ. 27-29.
7. लोढ़ा, कल्याणमल, कोहो पीड़ पणासेइ, पृ. 30-41.

अप्रैल-जून, 1990 (खण्ड-16, अंक-1)

1. मुनि किशनलाल, आगमों की प्रामाणिक संख्या : जयाचार्यकृत विवेचन, पृ. 1-11.
2. साध्वी योगक्षेमप्रभा, प्रामाण्यवाद, पृ. 12-19.
3. समणी मल्लिप्रज्ञा, अपरिग्रह-दर्शन, पृ. 20-31.
4. मेहता, मंगल प्रकाश, हिन्दी जैन काव्य का साधनात्मक स्वरूप, पृ. 32-34.
5. सोलंकी, परमेश्वर, समुत्तितंत्र का शकराज और उसका कालमान, पृ. 35-37.
6. समणी कुसुमप्रज्ञा, काल : एक अनुचिन्तन, पृ. 38-40.
7. शर्मा, गोपाल, कालिदास के नाटकों में लोक-विश्वास, पृ. 41-45.
8. समणी मंगलप्रज्ञा, मतिज्ञान एवं श्रुतज्ञान की भेदरेखा, पृ. 46-48.
9. जैन, अनिल कुमार, परमाणु के मूलभूत गुण, पृ. 49-51.

जुलाई-सितम्बर, 1990 (खण्ड-16, अंक-2)

1. समणी कुसुमप्रज्ञा, उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 1-7.
2. चन्द्रा, के. आर., प्राकृत व्याकरण में प्रयुक्त मध्यवर्ती प और व की परीक्षा, पृ. 8-10.
3. कुमार, रज्जुन, पृथ्वीकाय : एक विवेचन, पृ. 11-19.
4. जैन, नंदलाल, जैन शास्त्रों में भव्यामक्ष्य विचार, पृ. 20-34.
5. सोलंकी, परमेश्वर, 'त्रिलोकसार' का कल्की राजा और यूनानी लेखकों का सैण्ड्राकोटस का एक है?, पृ. 35-39.
6. बाली, चन्द्रकांत एवं उपेन्द्रनाथ राय, समुत्तितंत्र का शकराज और उसका कालमान (प्रतिक्रियाएं) पृ. 40-51.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1990 (खण्ड-16, अंक-3)

1. समणी मल्लिप्रज्ञा, अहिंसा और अपरिग्रह सिद्धान्त का संबंध-निरूपण, पृ. 1-5.
2. समणी मंगलप्रज्ञा, जीव और शरीर के संबंध हेतु, पृ. 6-10.
3. मेहता, मंगलप्रकाश, हिन्दी जैन काव्य : दार्शनिक प्रवृत्तियाँ, पृ. 11-15.
4. जैन, जिनेन्द्र कुमार, भगवती आराधना एवं प्रकीर्णकों में आराधना का स्वरूप, पृ. 16-23.
5. जैन, नंदलाल, जैन शास्त्रों में भव्यामक्ष्य विचार, पृ. 24-37.
6. जोशी, कमला, जैन एवं अन्य भारतीय दर्शनों में मोक्षदशा : एक तुलनात्मक दृष्टि, पृ. 38-43.

जनवरी-मार्च, 1991 (खण्ड-16, अंक-4)

1. साध्वी अशोकश्री, भिक्षु प्रतिमा, पृ. 1-4.
2. समणी कुसुमप्रज्ञा, विनीत-अविनीत की भेदरेखा, पृ. 5-8.
3. समणी मंगलप्रज्ञा, कालिक एवं उत्कालिक सूत्र, पृ. 9-12.

4. दुग्ग, बच्छराज, पारश्वत्य सन्दर्भ में जैन प्रमाण की सत्यता की कसौटी, पृ. 13-17.
5. चन्द्रा, के. आर., प्राचीन प्राकृत में मध्यवर्ती अल्पप्राण व्यंजनों के प्रायः लोप का औचित्य, पृ. 18-24.
6. जैन, रत्नलाल, भारतीय दर्शनों का प्राण-अहिंसा, पृ. 25-30.
7. जोशी, कमला, आध्यात्मिक विकास में सहायक मंत्र, पृ. 31-35.
8. जैन, अमय प्रकाश, जैन साहित्य में अशोक संवत्सर की खोज, पृ. 36-37.
9. सिंह, महेन्द्रनाथ, उत्तराख्ययन सूत्र में वर्णित पंच महाव्रत, पृ. 38-42.
10. त्रिवेद, देवसहाय, कल्की व सन्द्रकुपतस्, पृ. 43-45.
11. गीणगणोदेवसन्क्षेत्रं लाडनूं, पृ. 70.

अप्रैल-जून, 1991 (खण्ड-17, अंक-1)

1. लूनवाल, नानालाल, अनन्त के अनन्त भेद, पृ. 1-4.
2. सोलंकी, परमेश्वर, आचार्य हरिभद्रसूरि का काल-संशोधन, पृ. 5-10.
3. राय, उपेन्द्रनाथ, वीर निर्वाण काल, पृ. 11-26.
4. आनन्द, अरुण, उपाध्याय यशोविजयकृत पार्लजलयोग सूत्रवृत्ति में वर्णित, जैन कर्म-सिद्धान्त, पृ. 27-41.
5. महावीर निर्वाणवाद के सहस्रवर्ष, पृ. 42.
6. राजपूत, भूपसिंह, हांसी की विरल जैन मूर्तियां, पृ. 43-44.
7. त्रिवेद, देवसहाय, सम्राट् समुद्रगुप्त और उसका राजवंश, पृ. 45-50.
8. मुधुकणिकाएं- "निर्वाण काल वर्ष संख्या" पृ. 51-54.

जुलाई-सितम्बर, 1991 (खण्ड-17, अंक-2)

1. मिश्र, विश्वनाथ, ज्ञानप्रामाण्य विवेचन, पृ. 59-66.
2. समणी मंगलप्रज्ञा, आत्मा का यजन, पृ. 67-68.
3. साध्वी राजीमती, आदमी बूढ़ा क्यों होता है?, पृ. 69-72.
4. चन्द्रा, के. आर., सप्तमी एकवचन की प्राचीन विभक्तियां, पृ. 73-75.
5. स्व.काशीप्रसाद जायसवाल, पृ. 76.
6. मिश्र, मांगीलाल, शाश्वत यायावरी जैन श्रमणों की, पृ. 77-82.
7. साध्वी सुरेखाश्री, क्या सामान्यकेवली के लिए अर्हन्त पद उपयुक्त है?, पृ. 83-88.
8. मुनि जिवोजी, मुधुकणिकाएं- "दृष्टांत-शतक री जोड़", पृ. 89-98.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1991 (खण्ड-17, अंक-3)

1. शर्मा, गोपाल, संस्कृत वाङ्मय में लोक-अवधारणा, पृ. 107-110.
2. जैन, भागचन्द्र, जैन-बौद्ध विनय का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 111-118.
3. सिंघवी, सुधमा, जैननय न्याय द्वारा तत्त्वार्थ-निर्णय, पृ. 119-132.
4. जोशी, जगन्नाथ, भारतीय दर्शन की आशावादिता एवं प्रगतिशीलता, पृ. 133-144.
5. बाली, चन्द्रकान्त, वर्षाऽऽवास का इतिहास, पृ. 145-150.
6. चन्द्र, के. आर., सामान्य प्राकृत भाषा में मध्यवर्ती त द, पृ. 151-156.
7. संयमधारी साधु में लेश्याएं-एक विवेचन, पृ. 157-160.

जनवरी-मार्च, 1992 (खण्ड-17, अंक-4)

1. सोलंकी, परमेश्वर, सप्तर्षियों से कालगणनाएँ, पृ. 179-192.
2. शर्मा, देवदत्त, हिन्दी काव्य में पंच महाव्रत, पृ. 193-196.
3. जैन, रमेश, जैन दर्शन और पाश्चात्य मनोविज्ञान की तुलना, पृ. 197-202.
4. विजय कुमार एवं किशनलाल, जैन संस्कृति का विराट् प्रतिबिम्ब- जैन कला दीर्घा, पृ. 203-206.
5. मुनि गुलाबचन्द, तैरापंथ का संस्कृत साहित्य : उद्भव और विकास, पृ. 207-214.
6. मुनि सुखलाल, आचार्य भिक्षु का राजस्थानी साहित्य, पृ. 215-218.
7. मुनि विमल कुमार, तीर्थंकरों के नामकरण का हेतु और उनका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ, पृ. 219-228.

अप्रैल-जून, 1992 (खण्ड-18, अंक-1)

1. मेलड़ा, महावीराज, जैन परम्परा के विकास में श्राविकाओं का योगदान, पृ. 1-2.
2. सोलंकी, परमेश्वर, पंच परमेष्ठिपद और अर्हन्त तथा अरिहन्त शब्द, पृ. 3-13.
3. आचार्यश्री तुलसी स्तुति, पृ. 14.
4. जैन, सागरमल, गुणस्थान सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास, पृ. 15-29.
5. उत्तराख्ययन के दो संदर्भ, पृ. 30.
6. कुमारी, सुनीता, जैन एवं जैनेतर राजनीति में दूत, पृ. 31-34.
7. शेखावत, राजवीरसिंह, जैन दर्शन : स्यादवाद पद्धति, पृ. 35-40.
8. पाण्डेय, हरिशंकर, अश्रुवीणा में बिम्ब योजना, पृ. 41-58.
9. मुनि सुखलाल, तैरापंथ का राजस्थानी साहित्य (2), पृ. 49.
10. मुनि गुलाबचन्द, तैरापंथ का संस्कृत साहित्य : उद्भव और विकास, पृ. 49-53.
11. पंत, कमला, षड् आस्तिक एवं बौद्ध दर्शनों में मान्य कर्मवाद से जैनसम्मत कर्मवाद की विशिष्टता, पृ. 54-62.

जुलाई-सितम्बर, 1992 (खण्ड-18, अंक-2)

1. सोलंकी, परमेश्वर, काल का स्वरूप और उसके अवयव, पृ. 79-86.
2. पंत, कमला, सांख्य दर्शन और गीता में प्रकृति - एक विवेचन, पृ. 87-92.
3. जैन, सागरमल, जटासिंहनन्दि का वराहगुचरित और उसकी परम्परा, पृ. 93-106.
4. गुप्त, केशवप्रसाद, 'वसंतविलास' में वर्णित ऐतिहासिक तथ्यों का महत्त्व, पृ. 107-116.
5. पाण्डेय, हरिशंकर, प्राकृत भाषा के कतिपय अवयव, पृ. 117-122.
6. शेखावत, राजवीरसिंह, "जैन द्रव्य सिद्धान्त" - परिचय और समीक्षा, पृ. 123-130.
7. मुनि विमल कुमार, जैन वाङ्मय में उपलब्ध लक्ष्यों के प्रकार, पृ. 131-144.
8. मलैया, आसालता, संस्कृत-शतकपरम्परा में आचार्य विद्यासागर के शतक एक परिचय, पृ. 145-150.
9. मुनि सुखलाल, तैरापंथ के आधुनिक राजस्थानी संत-साहित्यकार (3), पृ. 151-156.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1992 (खण्ड-18, अंक-3)

1. सोलंकी, परमेश्वर, सृष्टि-विज्ञान में जैन उल्लेखों का महत्त्व, पृ. 173-176.
2. जैन, सुरेश, चित्रलेखा, जैन, जीवों और पौधों के लुप्त होने की समस्या, पृ. 177-180.
3. जैन, प्रेमसुमन, कवि हरिजन कृत, प्राकृत मलयसुन्दरी धरियं, पृ. 181-188.
4. कुमार, रज्जन, अनुप्रेक्षा : विचारों का सम्यक् चिन्तन, पृ. 189-197.
5. लोक देवता और उनके वाद्य, पृ. 198.
6. श्रीवास्तव, ए. एल., जैन तीर्थंकरों का गजामिषेक, पृ. 199-205.

7. परमधर्म श्रुतिविहित अहिंसा, पृ. 206.
8. जैन, रत्नलाल, भाग्य को बदलने का सिद्धान्त, पृ. 207-212.
9. शर्मा, मनोहर, आचार्यश्री तुलसी की राजस्थानी भाषा-शैली, पृ. 213-218.
10. पाठक, विनीता, प्रमाण-मीमांसा के परिप्रेक्ष्य में प्रमाण के लक्षण, पृ. 219-222.
11. शेखावत, राजवीरसिंह, जैन प्रमाण-मीमांसा, में स्मृति प्रमाण, पृ. 223-235.
12. गांधीजी ने जैन जगत् को जगाया, पृ. 236.
13. मुनि गुलाबचन्द, तैरापंथ का संस्कृत साहित्य : उद्भव और विकास-3, पृ. 237-244.
14. पाण्डेय, हरिशंकर, उत्तराध्ययन सूत्र में प्रयुक्त उपमान : एक विवेचन, पृ. 245-246.

जनवरी -फरवरी, 1993 (खण्ड-18, अंक-4)

1. सोलंकी, परमेश्वर, वर्द्धमान ग्रन्थागार, लाडनू की प्रत् और ऋग्वेद का ग्रन्थाग्रः परिमान, पृ. 273-284.
2. पारख, जौहरीमल, जिनागमों का संपादन, पृ. 285-392.
3. पाण्डेय, हरिशंकर, रत्नपालचरित : एक साहित्यिक अनुशीलन, पृ. 393-308.
4. पुरोहित, सोहनकृष्ण, जिनसेनकृत हरिवंशपुराण में प्राचीन राजतंत्र का स्वरूप, पृ. 309-315.
5. कृष्णदत्त बाजपेयी- श्रद्धांजलि, पृ. 316.
6. मुनि गुलाबचन्द्र, तैरापंथ का संस्कृत साहित्य : उद्भव और विकास-4, पृ. 317-322.
7. पंत, कमला, न्याय-वैशेषिक, योग एवं जैन दर्शनों के संदर्भ में ईश्वर, पृ. 323-330.
8. समणी, स्थितप्रज्ञा, स्यादवाद : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में, पृ. 331-140.

जनवरी-मार्च, 1993 (खण्ड-19, अंक-1) मूल्यपरक-शिक्षा विशेषांक

1. धानवी, शिवरतन, मूल्य शिक्षा की एक शैक्षिक आधार दृष्टि, पृ. 131-138.
2. पांडेय, रामशकल, मूल्य शिक्षा एवं शिक्षा : एक विश्लेषण, पृ. 139.

अप्रैल-जून, 1993 (खण्ड-19, अंक-1) अध्यात्म और विज्ञान विशेषांक

1. युवाचार्य महाप्रज्ञ, अध्यात्म और विज्ञान, पृ. 1-5.
2. मेहता, कृष्णराज, आत्मज्ञान और विज्ञान का समन्वय, पृ. 6-9.
3. भार्गव, दयानन्द, विज्ञान पर आध्यात्मिक नियन्त्रण की आवश्यकता, पृ. 10-15.
4. भारती, बलभद्र, दीलतसिंह कोठारी (1906-1913) विज्ञान और अहिंसा का संगम, पृ. 16-20.
5. जैन, सागरमल, जैनधर्म और आधुनिक विज्ञान, पृ. 21-35.
6. सिंह, दशरथ, अध्यात्म और विज्ञान : परिसंवाद-प्रतिवेदन, पृ. 36-46.

जुलाई-सितम्बर, 1993 (खण्ड-19, अंक-2)

1. जैन, प्रेमसुमन, आचार्य कुन्दकुन्द और परवर्ती साहित्य, पृ. 49-58.
2. जैन, अशोक कुमार, आचार्य कुन्दकुन्द का अनेकान्त दर्शन, पृ. 59-68.
3. जैन, अनिल कुमार, दिगम्बर परम्परा में गौतम स्वामी, पृ. 69-76.
4. शुक्ल, चन्द्रकान्त, शाकाहार : शास्त्रीय पक्ष, पृ. 77-82.
5. शेखावत, राजवीर सिंह, जैन दर्शन में मांसाहार निषेध, पृ. 83-92.
6. दूगड, बच्छराज, जैन दर्शन में परिप्रेक्ष्य में निःशस्त्रीकरण और विश्वशांति, पृ. 93-100.
7. राय, अश्विनीकुमार और हरिशंकर पांडेय, कर्पूर मंजरी में सौंदर्य भावना, पृ. 101-114.
8. पारख, जौहरीमल, अपडिण्णो, पृ. 115-128.
9. राय, उपेन्द्रनाथ, हर्षचरित में कुछ राजवृत्त, पृ. 129-135.
10. राज, उपेन्द्रनाथ, मगध का मौर्यशासक शालिशूक, पृ. 136-140.
11. धन्दा, के. आर., जिनागमों का संपादन, पृ. 141-159.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1993 (खण्ड-19, अंक-3)

1. णमोकार-मंत्र में 'ण' वर्ण का महत्त्व, पृ. 165-168.
2. राणा, जगमहेन्द्रसिंह, जैन दर्शन में पंच परमेष्ठी का स्वरूप, पृ. 169-172.
3. शर्मा, गोपाल, अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द, पृ. 173-176.
4. राय, अश्विनीकुमार एवं हरिशंकर पांडेय, 'अश्रुवीणा' का गीतिकाव्यत्व, पृ. 177-190.
5. साध्वी श्रुतयज्ञा, जैन दर्शन में मोक्षवाद, पृ. 191-202.
6. साध्वी सिद्धप्रज्ञा, रात्रि भोजन-विरमण व्रत : विभिन्न अवधारणाएं, पृ. 203-206.
7. धोरडिया, निर्मला, समराइच्छकहा : एक धर्मकथा, पृ. 207-214.
8. पाण्डेय, हरिशंकर, महाकवि भिक्षु के क्रान्तिकारी आयाम, पृ. 215-220.
9. सोलंकी, परमेश्वर, विश्वशांति के पुरोधा : आचार्यश्री तुलसी, पृ. 221-222.
10. जैन सागरमल, जैन आगमों में हुआ भाषिक स्वरूप परिवर्तन, पृ. 223-250.
11. समणी स्थितप्रज्ञा, जीवन विज्ञान के प्रयोग : मनुष्य का क्रतापूर्ण आचरण बन्द हो सकता है?, पृ. 251-256.

जनवरी-मार्च, 1994 (खण्ड-19, अंक-4)

1. राय, अश्विनीकुमार, रत्नपालचरित में बिम्बात्मकता, पृ. 263-276.
2. गुप्त, केशव प्रसाद, जैन-संस्कृत वाङ्मय के ऐतिहासिक महाकाव्य, पृ. 277-290.
3. त्रिपाठी, कृष्णपाल, नाट्यदर्पण में मौलिक चिन्तन, पृ. 291-306.
4. पाण्डेय, हरिशंकर, प्रश्न-व्याकरण में अहिंसा का स्वरूप, पृ. 307-318.
5. प्रसाद, शिव, श्वेताम्बर-परम्परा का चन्द्रकुल और उसके प्रसिद्ध आचार्य, पृ. 319-344.
6. समणी चैतन्यप्रज्ञा, ध्यान-ह्रात्रिशिका में ध्यान का स्वरूप, पृ. 345-352.
7. समणी सत्यप्रज्ञा, कालूयशोविलास में चित्रात्मकता, पृ. 353-366.
8. समणी स्थितप्रज्ञा, आचार्यश्री महाप्रज्ञ का साधनादर्शन, पृ. 367-374.
9. धोरडिया, निर्मला, 'स्थानांग' में संगीत कला के तत्त्व, पृ. 375-388.

अप्रैल-सितम्बर, 1994 (खण्ड-20, पूर्णांक-90)

1. जैन, नंदलाल, कर्म और कर्मबंध, पृ. 9-21.
2. समणी मल्लिप्रज्ञा, अनेकांत दृष्टि का व्यापक उपयोग, पृ. 21-28.
3. जैन, जिनेन्द्र, भगवती आराधना के संदर्भ में मरण का स्वरूप, पृ. 29-36.
4. त्रिपाठी आनन्द प्रकाश, जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में पुरुषार्थ चतुष्टय, पृ. 37-46.
5. दूगड़, बच्छराज, पर्यावरण : एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण, पृ. 47-54.
6. चौबीसा, दिनेश चन्द्र, अभिज्ञानशाकुन्तल में गान्धर्व विवाह : एक समस्या, पृ. 55-56.
7. जोशी, जे.एन. एवं कमला रंत, भर्तृहरि और उनका विज्ञान शतक, पृ. 57-74.
8. शेखावत, राजवीर सिंह, कुन्दकुन्द के दर्शन में चारित्र का स्वरूप, पृ. 75-88.
9. जैन, अशोक कुमार, सुदर्शनोदय महाकाव्य का आधार दर्शन, पृ. 89-94.
10. पाण्डेय, हरिशंकर, श्रीमज्जयाचार्य विरचित चौबीसी : एक अनुशीलन, पृ. 95-106.
11. समणी कुसुमप्रज्ञा, निर्युक्ति के रचनाकार : एक विमर्श, पृ. 107-114.
12. सोलंकी, परमेश्वर, जैन साहित्य एवं इतिहास लेखन, पृ. 115-128.
13. समणी स्थितप्रज्ञा, संबोधि के आगमिक स्रोत, पृ. 129-142.
14. शर्मा, मुरारी, जैन योग और संगीत, पृ. 143-148.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1994 (खण्ड-20, पूर्णांक-91)

1. पुरोहित, रोहनकुण्ड, जैनधर्म में रथयात्रा महोत्सव, पृ. 153-156.
2. शर्मा, लाकेश्वर प्रसाद, रामस्नेही सन्त रामचरणजी पर भीखणजी का प्रभाव, पृ. 157-164.
3. झा, कुमुदनाथ, जैन दर्शन का अपरिग्रहवाद : आज की आवश्यकता, पृ. 165-170.
4. शेखावत, राजवीर सिंह, कुन्दकुन्द के दर्शन में उपयोग की अवधारणा, पृ. 171-176.
5. मुनि गुलाबचन्द्र, तैरापन्थ में प्राकृत-साहित्य का उद्भव और विकास, पृ. 177-192.
6. मुनि कामकुमार नन्दी, श्रुत-परम्परा, पृ. 193-196.
7. समणी चैतन्यप्रज्ञा, ध्यान-द्वात्रिंशिका- एक परिचय, पृ. 197-202.
8. जोशी, मुन्नी, मार्कण्डेय पुराण में देवी शक्ति का स्वरूप, पृ. 203-208.
9. जैन, अनिल कुमार, क्या अकाल मृत्यु सम्भव है?, पृ. 209-216.
10. पाण्डेय, हरिशंकर, श्रीमद्भागवतीय आख्यानों का विवेचन, पृ. 217-224.
11. दूगड़, बच्छराज, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और शांतिशोध, पृ. 225-230.
12. समणी स्थितप्रज्ञा, प्रेक्षाध्यान की वैज्ञानिकता, पृ. 231-236.
13. साध्वी संचितयशा, स्तुति के तत्त्व, पृ. 237-242.

जनवरी-मार्च, 1995 (खण्ड-20, पूर्णांक-92)

1. घोरडिया, निर्मला, स्थानांग-आगम, पृ. 261-264.
2. समणी प्रसन्नप्रज्ञा, भक्ति और आराध्य का स्वरूप, पृ. 265-272.
3. पाण्डेय, हरिशंकर, महाकवि महाप्रज्ञ का जीवन दर्शन, पृ. 273-288.
4. सिंह, प्रद्युम्नशाह, जैन दर्शन में लेश्या-एक विवेचन, पृ. 289-298.
5. घर, अनिलकुमार, अनेकान्तवाद व नयवाद का दार्शनिक स्वरूप, पृ. 299-308.
6. त्रिपाठी, आनंदप्रकाश, आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन में 'ईश्वर', पृ. 309-316.
7. समणी स्थितप्रज्ञा, 'संबोधि' में प्रयुक्त छन्द, पृ. 317-326.
8. सोलंकी, ऋग्वेद की मन्त्र-संख्या, पृ. 327-334.
9. सिन्हा, कुमुद, गांधीजी की शिक्षा में मूल्यपरक तत्त्व, पृ. 335-342.

अप्रैल-जून, 1995 (खण्ड-21, पूर्णांक-93)

1. जैन, नंदलाल, कुन्द-कुन्द की दृष्टि में आगम का स्वरूप, पृ. 1-10.
2. समणी मंगलप्रज्ञा, ज्ञान स्वरूप विमर्श, पृ. 11-26.
3. तिवारी, निर्मल कुमार, जैन तथा सांख्य दर्शनों में संज्ञान, पृ. 27-32.
4. समणी चैतन्यप्रज्ञा, 'भगवती' में सृष्टि तत्त्व-पंचास्तिकाय, पृ. 33-38.
5. साध्वी संचितयशा, दशवैकालिक और धम्मपद में भिक्षु, पृ. 39-44.
6. विजयरानी, 'तस्मान्न बध्यते' - एक विवेचन, पृ. 45-50.
7. दूगड़, बच्छराज, शांति-शिक्षा का स्वरूप और विकास, पृ. 51-58.
8. चौबीसा, दिनेश चन्द्र, 'उत्तर रामचरित' का सामाजिक चिन्तन, पृ. 59-64.
9. घर, अनिल, दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आन्दोलन, पृ. 65-78.

जुलाई-सितम्बर, 1995 (खण्ड-21, पूर्णांक-94)

1. कुमार, राजीव एवं आनंद कुमार, ब्राह्मणों की दार्शनिक मान्यताएं, पृ. 115-120.
2. जैन, प्रकाशचन्द्र, मानसुंग : भक्तामर स्तोत्र, पृ. 121-126.
3. साध्वी संचितयश, हरिकेशीय आख्यान, पृ. 127-134.
4. पाण्डेय, हरिशंकर, उपनिषद् और आचारांग, पृ. 135-150.
5. पंत, लज्जा, सारस्वत व्याकरण में समास, पृ. 151-158.
6. मुनि श्रीचंद, पंचसंधि की जोड़, पृ. 159-180.
7. ओझा, आर.के., दाम्पत्य जीवन और उत्तरदायित्व, पृ. 181-186.
8. दूगड, बच्छराज, संघर्ष निराकरण, पृ. 187-204.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1995 (खण्ड-21, पूर्णांक-95)

1. पटना, सोहनलाल, जैन नमः सिद्धन्त, पृ. 235-244.
2. साध्वी जतनकुमारी, ओधनियुक्ति में उपधि, पृ. 245-250.
3. शर्मा, सुरेन्द्र, जैन दर्शन में शांति की अवधारणा, पृ. 251-260.
4. पाण्डेय, विनोद कुमार, जैनदर्शन में सल्लेखना, पृ. 261-266.
5. वेदालकार, रघवीर, 'वाक्पदीय' में काल की अवधारणा, पृ. 267-272.
6. राय, उपेन्द्रनाथ, मगध में काण्व-शासन, और युगपुराण, पृ. 273-280.
7. प्रसाद, शिव, काम्यकमच्छ, पृ. 281-284.
8. साध्वी संचितयश, पंच महाव्रत- एक संक्षिप्त विवेचन, पृ. 285-294.

जनवरी-मार्च, 1996 (खण्ड-21, पूर्णांक-96) कर्मवाद-विशेषांक

1. आचार्य तुलसी, कर्मवाद क्या है?, पृ. 1-8.
2. भार्गव, दयानन्द, कर्म सिद्धान्त के कतिपय सर्वमान्य पहलू, पृ. 9-12.
3. जैन, नंदलाल, जैन कर्मवाद : वैज्ञानिक मूल्यांकन, पृ. 13-22.
4. मुनि धर्मेश, कर्म बन्ध : एक जैव मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, पृ. 23-28.
5. मुनि सुखलाल, कर्म और जेनेटिक संरचना, पृ. 29-32.
6. मुनि महेन्द्रकुमार, जागतिक नियमों के संदर्भ में कर्मवाद, पृ. 33-38.
7. सोलंकी, परमेश्वर, मनुस्मृति और उसका कर्मफल-सिद्धान्त, पृ. 39-42.
8. साध्वी मुदितयश, हाँ! कर्म बदला जा सकता है, पृ. 43-50.
9. जैन, भागचन्द्र, जैन-बौद्ध दर्शन के कर्मवाद की कतिपय विशेषताएं, पृ. 51-56.
10. समणी मंगलप्रज्ञा, कर्म सिद्धान्त और श्रायोपशमिक भाव, पृ. 57-64.
11. समणी स्थितप्रज्ञा, संबोधि में 'कर्मवाद', पृ. 65-70.
12. समणी प्रतिभाप्रज्ञा, 'सूत्रकृतांग' में कर्म संबंधी चिन्तन, पृ. 71-78.

अप्रैल-जून, 1996 (खण्ड-22, पूर्णांक-97)

1. आचार्य महाप्रज्ञा, आर्ष भाषा : स्वरूप एवं विश्लेषण, पृ. 1-12.
2. नन्द, सुबोध कुमार, वैदिक क्रियापद : एक विवेचन, पृ. 13-24.
3. सिंह, सरस्वती, आख्यात एवं धातु का दार्शनिक स्वरूप, पृ. 25-28.
4. घोषसी, कमलेशकुमार छ., 'अविमारकम्' में प्रयुक्त प्राकृत-अव्ययवाद, पृ. 29-36.
5. शर्मा, जयचन्द्र, णमोकार महामंत्र : संगीतिक चिन्तन, पृ. 37-42.
6. पण्डित, प्रबोध वै., प्राकृत के प्राचीन बोली विभाग, पृ. 43-60.
7. बब्बी, कुमारी, मृच्छकटिक कालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 61-68.

8. मिश्र, मधुरिमा, भवभूति की दृष्टि में परिवार का स्वरूप, पृ. 69-72.
9. कुमार, संजय, बौद्ध दर्शन में स्मृति प्रस्थानों का महत्व, पृ. 73-78.
10. सोलंकी, परमेश्वर, आदि शाब्दिक और पारंपरीय प्राकृत, पृ. 79-87.
11. गणपतिसिंह, राय, सोलंकी-राजवंश का यायावरी इतिहास, पृ. 1-14.
12. मुनि श्रीचंद, मानव और देवताओं का कालमान, पृ. 15-20.
13. मुनि हड़मानमलजी, विक्रम संवत्सर में न्यूनाधिक मास, पृ. 21-28.
14. सोलंकी, परमेश्वर, झाबरा (पोकरण) की देवलियां, पृ. 29-32.
15. प्रतापसिंह, ओं सृष्टि संवत्, पृ. 33-38.
16. समणी कुसुमप्रज्ञा, दशवैकालिक निर्युक्ति, पृ. 1-16.

जुलाई-सितम्बर, 1996 (खण्ड-22, पूर्णांक-98)

1. अशोक, जैन तंत्र साहित्य, पृ. 89-90.
2. जैन, सुरेश, जैन धर्म एवं पर्यावरण, पृ. 91-96.
3. सचदेवा, सुभाषचन्द्र, अनेकान्तवाद की सार्वभौमिकता, पृ. 97-100.
4. शेखावत, राजवीरसिंह, वैदिक साहित्य में तत्त्व विचार, पृ. 101-120.
5. वर्मा, सुरेन्द्र, 'आयारो' में हिंसा-अहिंसा विवेक, पृ. 111-116.
6. मुनि श्रीचंद, वनस्पतियों में जीवेन्द्रिय संज्ञान, पृ. 117-120.
7. राय, रामदीप, कविराज राजशेखर रचित 'कर्पूर मंजरी', पृ. 121-126.
8. राय, उपेन्द्रनाथ, साहित्य लहरी के दो पद, 127-136.
9. समणी प्रसन्न प्रज्ञा, 'कर्पूरमंजरी' का सौन्दर्य निकष, पृ. 137-144.
10. पंत, लज्जा, 'रत्नावली' में अलंकार-सौन्दर्य, पृ. 145-154.
11. रावल, जयश्री, 'आषाढ़ का एक दिन' का कालिदास, पृ. 155-158.
12. मुनि दुलहराज, योगविशिका (आचार्य हरिमद्र), पृ. 1-8.
13. सोलंकी, परमेश्वर, रोडेराव की 'रउरवेल' का मूलपाठ, पृ. 9-20.
14. मुनि हड़मानमल, राजस्थानी कहावतें- एक संक्षिप्त संकलन, पृ. 21-44.
15. शर्मा, शक्तिधर, प्रमाणवाद और क्वांटम यान्त्रिकीय धारणाएं, पृ. 45-50.
16. 45 जैनागमों का सुवर्णाक्षरी मूलपाठ, पृ. 51-54.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1996 (खण्ड-22, पूर्णांक-99)

1. मुनि गुलाबचन्द्र, मनःपर्याय ज्ञान की संभव है?, पृ. 167-170.
2. मंगलाराम, अहिंसा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, पृ. 171-190.
3. मुनि सुखलाल, श्रुत-ज्ञान- एक मीमांसा, पृ. 191-194.
4. जैन, उदयचंद, आचार्य कुंदकुंद की काव्यकला, पृ. 195-204.
5. चन्दा, के. आर., 'प्रवचनसार' में छन्द की दृष्टि से पाठों का संशोधन, पृ. 205-210.
6. साध्वी विश्रुतयिमा, जिनकल्प की समाधारी, पृ. 211-216.
7. वियजराणी, वाल्मीकि-रामायण में दार्शनिक तत्व, पृ. 217-226.
8. शर्मा, मनोहर, राजस्थानी भाषा में खड़ी बोली का प्रयोग, पृ. 227-230.
9. पाण्डेय, हरिशंकर, 'णायकुमार चरित' का नायक, पृ. 231-236.
10. सोलंकी, परमेश्वर, साहित्य-सत्कार एवं पुस्तक-समीक्षा, पृ. 237-242.
11. सोलंकी, परमेश्वर, भारत में ईशानसीह का आगमन, पृ. 3-4.
12. बाली, चन्द्रकान्त, विक्रम संवत् : 36 ईसवी पूर्व, पृ. 5-10.
13. मुनि गुलाबचन्द्र, वेद और आगमकाल में पदाप्रथा, पृ. 11-16.
14. सोलंकी, परमेश्वर, वृद्धि नवकार मंत्र कल्प, पृ. 3-6.
15. मुनि श्रीचंद एवं झूमरमल बैगानी, नक्षत्र भोजन के मासपरक शब्दों का अर्थ, पृ. 7-18.
16. शर्मा, जयचंद्र, णमो सिद्धार्थ : नाद सौन्दर्य, पृ. 19-21.

जनवरी-मार्च, 1997 (खण्ड-22, पूर्णांक-100)

1. जैन, जिनेन्द्र, कर्म बंध और जैनदर्शन, पृ. 243-250.
2. त्रिपाठी, आनंद प्रकाश, उपनिषदों में कर्म का स्वरूप, पृ. 251-256.
3. पसाद, अतुलकुमार, अनुत्तरोपपातिकदशा की विषयवस्तु, पृ. 257-266.
4. समणी ऋजुप्रज्ञा, आत्म-परिमाण, पृ. 267-274.
5. जैन, नंदलाल, जीवन की परिभाषा और अकलंक, पृ. 275-286.
6. श्रीवास्तव, आनंदप्रकाश, एलौरा की जैन मूर्तियों का शिल्प शास्त्रीय वैशिष्ट्य, पृ. 287-294.
7. मुनि गुलाबचंद्र, काव्य के तत्त्व और परिभाषाएं, पृ. 295-302.
8. जोशी, सुनीता, उपमा-अलंकार के स्वरूप-लक्षण, पृ. 303-310.
9. समणी प्रसन्नप्रज्ञा, मनोविकास की भूमिकाएं, पृ. 311-314.
10. पाण्डेय, हरिशंकर, उपनिषद् और जैन धर्म के आत्मस्वरूप-चिंतन, पृ. 315-324.
11. ममता, कुमारी, वाल्मीकि-रामायण की रूमिला, पृ. 325-330.
12. सोलंकी, परमेश्वर, साहित्य-सत्कार एवं ग्रंथचर्चा, पृ. 331-335.
13. शर्मा, शक्तिधर, मास और राशियों का निर्धारण, पृ. 3-6.
14. सोलंकी, परमेश्वर, नवकुरुक्षेत्र निर्माण-प्रशस्ति, पृ. 7-14.
15. जैन, नीलम, जैन मैघदूतम् के रचनाकार- आचार्य मेरुतुंग, पृ. 15-18.
16. चतुर्वेदी, संदीपकुमार, शैव जैन तीर्थ : वटेश्वर, पृ. 19-22.

अप्रैल-जून, 1997 (खण्ड-23, पूर्णांक-101)

1. पाण्डेय, इन्दु, पर्यावरण विकास का अनिवार्य सोपान है, पृ. 1-6.
2. साध्वी स्वस्तिका, आचारांग में प्रेक्षाध्यान के सूत्र, पृ. 7-11.
3. कोठारी, मीणा एवं रामजी मीणा, प्राणायाम : एक आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण, पृ. 13-20.
4. जैन, भागचन्द्र, मध्ययुगीन जैन योग का क्रमिक विकास, पृ. 21-28.
5. पाण्डेय, हरिशंकर, उपनिषद् और जैन दर्शन में आत्म स्वरूप-चिन्तन (2), पृ. 29-38.
6. जोशी, सुनीता, शब्द शक्तियां- एक संक्षिप्त विवेचन, पृ. 39-52.
7. शर्मा, ब्रजनारायण, 'तत्पूर्वकम् अनुमानम्'- एक विश्लेषण, पृ. 53-58.
8. मंगलाराम, न्यायमिश्रित व्याकरण-परम्परा में श्री जयकृष्ण तर्कालंकार का योगदान, पृ. 59-92.
9. अमरसिंह, जैन परम्परा में स्तूप, पृ. 93-100.
10. श्रीवास्तव, शशिकला, ओसिया का महावीर मन्दिर और उसका वास्तुशिल्प, पृ. 101-108.
11. सोलंकी, परमेश्वर, प्राण, मन और इन्द्रियों में एकत्व साधने का योग : स्वर योग, पृ. 109-116.
12. दाधीच, सोहनलाल एवं परमेश्वर सोलंकी, जैन आगमों में वनस्पति वर्णन, पृ. 117-120.
13. सोलंकी, परमेश्वर, जैन कालगणना और तीर्थकर, पृ. 123-129.
14. त्रिवेद, देवसहाय, कल्की व सन्द्रकुपतम्, पृ. 131-134.
15. सोलंकी, परमेश्वर, हस्तिकुण्डली के दो जैन शिलालेख, पृ. 135-138.
16. प्रतापसिंह, भारतीय माप और दूरियां, पृ. 139-142.
17. बाठिया, हजारीमल, पुण्य श्लोक मुनि पुण्यविजयजी जन्मशती, पृ. 143-146.

जुलाई-सितम्बर, 1997 (खण्ड-23, पूर्णांक-102)

1. लोढ़ा, भोपालचंद, पर्यावरण सुरक्षा, जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में, पृ. 167-170.
2. सदयात, निशी, जैन दर्शन में सामाजिक न्याय, पृ. 171-176.
3. मुनि धर्मेश, जैन परंपरा में कायोत्सर्ग, पृ. 177-184.
4. मुनि विमलकुमार, तेरापंथ धर्मसंघ में प्राकृत भाषा के पठन-पाठन का संक्षिप्त इतिहास, पृ. 185-194.
5. पंत, लज्जा, रसभेद- एक समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 195-202.
6. जोशी, सुनीता, काव्य का निर्दुष्ट लक्षण?, पृ. 203-210.
7. जैन, अनिल कुमार, गुणस्थान तथा उनके आरोहण-अवरोहण का क्रम, पृ. 211-224.
8. प्रतापसिंह, 'सृष्टि' पर एक दृष्टिपात, पृ. 225-234.
9. तिवारी, रमाशंकर, कालिदास का 'रामगिर' कहाँ है?, पृ. 235-240.
10. शर्मा, जयचंद्र, मरुधरा के पेड़-पौधों में स्वरों का निवास, पृ. 241-244.
11. शर्मा, मनोहर, 'अहिंसा परमोधर्म' की एक लोकधा, पृ. 245-248.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1997 (खण्ड-23, पूर्णांक-103)

1. श्रीवास्तव, ए. एल., अष्टमांगलिक विह और उनके सामूहिक अंकन, पृ. 269-276.
2. समणी स्थितप्रज्ञा, जैन आगम एवं गीता में समत्व का स्वरूप, पृ. 277-284.
3. सचदेवा, सुभाषचन्द्र, उपनिषदों में जैन धर्म, पृ. 285-292.
4. पाण्डेय, विनोदकुमार, बौद्ध, जैन और वैदिक परम्परा में शील की अवधारणा, पृ. 293-298.
5. जैन, वीणा, 'अहिंसा' के विकास में भगवान् पार्श्वनाथ का योगदान, पृ. 299-304.
6. सिंघल, संगीता, 'पंचसमिति' - एक संक्षिप्त निरूपण, पृ. 305-310.
7. शर्मा, जयचंद्र, जैन समाज का भक्ति-संगीत, पृ. 311-314.
8. शर्मा, ब्रजनासायण, 'अर्थ' - एक अर्थ विश्लेषण, पृ. 315-324.
9. जैन, सागरमल, जैन आगमों की मूल भाषा : अर्धमागधी या सौरसेनी?, पृ. 325-348.
10. सोलंकी, परमेश्वर, जैन स्थापत्य के तीन भव्य जैन मंदिर, पृ. 349-352.
11. प्रतापसिंह, 1 को वे पुरुषस्य प्रतिमा, पृ. 353-358.
12. गर्ग, वेद प्रकाश, भट्टोत्पल : समय और रचनाएं, पृ. 359-366.
13. समणी चिन्मयप्रज्ञा, आगम सूत्रों की वर्तमान भाषा, पृ. 367-374.

जनवरी-मार्च, 1998 (खण्ड-23, पूर्णांक-104)

1. साध्वी विमलप्रज्ञा, निक्षेप-भाषा और विचार की वैज्ञानिक पद्धति, पृ. 379-384.
2. श्रीवास्तव, ए. एल., भारतीय लोक जीवन का मांगलिक प्रतीक-धापा, पृ. 385-396.
3. समणी मंगलप्रज्ञा, शरीर में अतीन्द्रिय ज्ञान के स्थान, पृ. 397-402.
4. साध्वी श्रुतयशा, धारणा : एक संक्षिप्त विमर्श, पृ. 403-412.
5. जैन, नंदलाल, जैन की सैद्धांतिक धारणाओं में क्रम परिवर्तन, पृ. 413-418.
6. मुनि श्रीचंद, जैन आगमों में ज्योतिष : एक पर्यालोचन, पृ. 419-436.
7. त्रिपाठी, आनंदप्रकाश, आचार्य कुंदकुंद की कृतियों में 'आत्मा', पृ. 437-442.
8. जैन, मुन्नो, जैन पद्य साहित्य में पार्श्वनाथ, पृ. 443-448.
9. पुरोहित, सोहन कृष्ण, राजस्थान में जैन मंदिरों की आर्थिक व्यवस्था, पृ. 449-454.
10. मुनि विमलकुमार, गुरुदेव के काव्यों में रस-परिपाक, पृ. 455-460.
11. पाण्डेय, हरिशंकर, आचार्य महाप्रज्ञ का सौन्दर्य दर्शन, पृ. 471-473.

12. मूँघड़ा, माधोदास, बौद्ध धर्म दर्शन : एक दृष्टि, 455-460.
13. शर्मा, जयचंद्र, संगीत का प्राणतत्त्व, पृ. 493-496.
14. छाजेड, वीरबाला, अस्तित्ववाद, पृ. 497-502.
15. मिश्र, रतनलाल, प्राचीन भारत में परिग्राजिकार्य, पृ. 503-506.

अप्रैल 1998- जून 1999 (खण्ड-26, पूर्णांक-105) पार्श्वनाथ स्तुति विशेषांक

प्राकृत निबद्ध स्तुति

1. आचार्य भद्रबाहुस्वामी, उपसर्गहर स्तोत्र (5 गाथा), पृ. 1.
2. आचार्य भद्रबाहुस्वामी, उपसर्गहरस्तोत्र (7 गाथा), पृ. 2.
3. आचार्य भद्रबाहुस्वामी, उपसर्गहर स्तोत्र (10 गाथा), पृ. 3.
4. आचार्य भद्रबाहुस्वामी, उपसर्गहर स्तोत्र (11 गाथा), पृ. 4.
5. आचार्य भद्रबाहुस्वामी, उपसर्गहरस्तोत्र (27 गाथा), पृ. 5-7.
6. अभयदेव सूरि, श्री जय तिहुअण स्तोत्र, पृ. 8-12.
7. मानतुंगसूरि, श्री नमिऊण स्तोत्र, पृ. 13-14.
8. अज्ञात, भयहर स्तोत्र, पृ. 15.
9. अज्ञात, गौडी पार्श्वनाथ, पृ. 16.
10. अज्ञात, श्री जीरापल्ली पार्श्वनाथ स्तवर, पृ. 17-20.
11. पूर्णकलशगणि, श्री रथंभन पार्श्वजिन स्तवन, पृ. 21-23.
12. प्रभावीक पार्श्वनाथस्य स्तुति मंत्र, पृ. 24.
13. जिनदत्त सूरि, श्री पार्श्वतीर्थकृति, पृ. 25-28.
14. आचार्य मानतुंग, पास जिण थवण, पृ. 29-30.
15. जिनप्रभसूरि, नवग्रहगर्भित स्तोत्रम्, पृ. 31-35.

संस्कृत निबद्ध स्तुति

1. आचार्य सिद्धसेन, 'कल्याण मंदिर स्तोत्रम्', पृ. 36-41.
2. सर्वविभक्त्यात्मक पार्श्वस्तव, पृ. 42.
3. शिवनाग, श्री धरणोरगेन्द्र स्तोत्र, पृ. 43-45.
4. जिनचन्द्रराज, श्रीपार्श्वस्तव, पृ. 46.
5. मेरुतुङ्ग सूरि, श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र, पृ. 47.
6. जयसागर, स्तंभक पार्श्वनाथ स्तवन रेखा, पृ. 48.
7. जिनपति सूरि, श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम्, पृ. 49-51.
8. श्री मंत्राधिराज स्तोत्रम्, पृ. 52-54.
9. कुलप्रभ प्रणीत, मन्त्राधिराज गर्भित स्तोत्रम्, पृ. 55.
10. महामंत्रगर्भित स्तोत्रम्, पृ. 56.
11. पार्श्व जिन स्तुति, पृ. 57.
12. षड्भाषायां स्तुतिः, पृ. 58-59.
13. जिनदत्तसूरि, 'स्तम्भक पार्श्वनाथ स्तोत्र', पृ. 60-63.
14. आचार्य कल्याणसागरसूरि, पार्श्व सहस्रनाममाला स्तोत्र, पृ. 64-76.
15. 'श्रीपार्श्वनाथ जिनाष्टकम्', पृ. 77.
16. पार्श्वनाथ स्तोत्र, पृ. 78.
17. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तोत्र, पृ. 79.
18. 'पार्श्वनाथ स्तुतिः', पृ. 80.
19. धतुरक्षरायां बृहत्स्तवन, पृ. 81.
20. आचार्य महाप्रज्ञ, श्री पार्श्वनाथ स्तुति, पृ. 82.

21. शंखेश्वर जिनस्तवः, पृ. 83.
22. करहेटक पार्श्वनाथ स्तोत्र, पृ. 83.
23. जय सागर, पार्श्व जिन स्तवन, पृ. 84.
24. बप्पमट्टि सूरि, पार्श्वनाथ स्तुति, पृ. 85.
25. पार्श्वस्तुति, पृ. 86.
26. पार्श्वचन्द्र, जीरापल्ली श्री पार्श्वनाथ अष्टकम्, पृ. 87.
27. पार्श्वनाथ स्तोत्रम्, पृ. 88.
28. पार्श्वजिनवृद्ध स्तवनम्, पृ. 89-90.
29. मेघविजय वाचक, श्रीशंखेश्वर पार्श्व स्तवनम्, पृ. 91-93.
30. लक्ष्मी वल्लभ, पार्श्व स्तुति, पृ. 94.
31. श्री पारसनाथ स्तोत्रम्, पृ. 95.
32. नवपल्लव पार्श्व जिन स्तवन, पृ. 96.
33. पार्श्वनाथ स्तुति, पृ. 97-98.
34. पार्श्वनाथ स्तुति, पृ. 99.
35. पार्श्वजिन स्तुति, पृ. 100.
36. सिद्धान्तराज, श्रीफलवर्द्धिका पार्श्वनाथ, पृ. 101.
37. श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम्, पृ. 102.
38. धर्मघोषसूरि, श्री चिंतामणि पार्श्वमंत्रकल्प, पृ. 104-107.
39. लक्ष्मीरत्न कृत, चिंतामणि पार्श्व जिन स्तवनम्, पृ. 108.
40. पार्श्वस्तुति, पृ. 108.
41. पद्मप्रभदेव, श्री चिंतामणि पार्श्व अष्टक, पृ. 109.
42. कलिकुंड पार्श्वजिन महामंत्र, पृ. 110.
43. सोमदत्त सूरि, कुकुमलोल पार्श्व जिनस्तवन, पृ. 111.
44. पार्श्व जिन स्तुति, पृ. 112.
45. पार्श्वनाथ स्तोत्रम्, पृ. 112.
46. शंखेश्वर पार्श्वनाथ, पृ. 113.
47. श्री शंखेश्वर पार्श्व स्तोत्र, पृ. 113.
48. मानतुंग सूरि, जीरापल्ली पार्श्वनाथ स्तोत्रम्, पृ. 114.
49. मुनि रत्नसिंह, पार्श्वजिनाटकम्, पृ. 115.
50. पार्श्वस्तव, पृ. 116.
51. श्री पार्श्व जिन स्तोत्रम्, पृ. 117-119.
52. पद्मसुन्दर सूरि, पार्श्वनाथ स्तोत्र, पृ. 120-122.
53. सकल कीर्ति, पार्श्वजिन स्तुति, पृ. 123.
54. समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्वस्तुति, पृ. 124.
55. पूर्वाचार्य, मंत्रगर्भित श्री पद्मावती स्तोत्र, पृ. 125-129.
56. पार्श्वदेवगणि, पद्मावत्यष्टकम्, पृ. 130-131.
57. श्री पद्मावती स्तोत्रम्, पृ. 132.
58. पार्श्व स्तुति, पृ. 133.
59. श्री पार्श्वनाथस्तवन, पृ. 134.
60. पार्श्वनाथ स्तुति, पृ. 134.
61. श्री पार्श्व जिनवर महिम्न स्तोत्र, पृ. 135-140.
62. गौडी पार्श्व स्तव, पृ. 141.
63. मंत्राक्षर गर्भित पार्श्वनाथ स्तव, पृ. 142.
64. सहजकीर्ति उपाध्याय, श्री पार्श्वनाथ महादंडक स्तुति, पृ. 143.

लोकभाषा निबद्ध स्तुति

1. मंत्रमय श्री पार्श्व जिन स्तोत्र, पृ. 149.
2. मंत्रमय श्री पार्श्व जिन स्तोत्र, पृ. 150.
3. पार्श्वजिन स्तुति (अपभ्रंश), पृ. 151.
4. जिनहंस, पार्श्वनाथ लघु स्तोत्र, पृ. 152.
5. पार्श्व जिन स्तवन, पृ. 153.
6. जिनचंद, श्री पार्श्वनाथ जी का स्तोत्र, पृ. 154.
7. आचार्य जयमल, पार्श्व देव तुम्हारा दर्शन, पृ. 155.
8. आचार्य जयमल, पुरिसादाणी पास, पृ. 156-157.
9. आचार्य तुलसी, भगवान पार्श्व वन्दना, पृ. 158.
10. आचार्य तुलसी, शत-शत प्रणाम हो, पृ. 159.
11. बनारसीदास, कल्याण मंदिर स्तोत्र, पृ. 160-163.
12. श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र, पृ. 164-169.
13. ओं श्री विषहर पार्श्वनाथ, पृ. 170.
14. चंदन मुनि, पार्श्वप्रभु बारह मासा, पृ. 171-177.
15. जिनहरष, श्री पार्श्वनाथ की निराणी, पृ. 178-181.
16. समय सुंदर, श्री पार्श्वनाथ छंद नाकोडा, पृ. 182.
17. प्रार्थना पार्श्व भगवान की, पृ. 183.
18. ओं पार्श्वनाथ जी का छंद, पृ. 184.
19. श्री पार्श्वनाथ के भवान्तर, पृ. 185.
20. खेमकरण, पार्श्वनाथ स्तुति, पृ. 186.
21. विनय, गोडी पार्श्वनाथ स्तवन, पृ. 187.
22. धंभण पार्श्वनाथ स्तवन, पृ. 188-192.
23. कलिकुंड पार्श्वनाथ नो स्तोत्र, पृ. 193.
24. दीप विजय, गोडिपार्श्व जिन स्तवन, पृ. 194.
25. वसता मुनि, सुग्यांनी साहिब म्हांरी अरज, पृ. 195.
26. चिन्तामणि पार्श्वनाथ अष्टक, पृ. 196-197.
27. धर्मसी, अष्टभयनिवारण गौडी पार्श्व, पृ. 198-201.
28. रंग विनय, गौडी पार्श्व, पृ. 202-203.
29. विनेचंद, पार्श्वनाथजी की ढाल, पृ. 204.
30. सुगरसौम, पारसनाथ स्तवन, पृ. 205.
31. क्षमाकल्याण, श्री पार्श्व स्तुति, पृ. 206.
32. भोज, परणमु पास जगदा, पृ. 207.
33. जिनभक्ति सूरि, प्रह ऊठी प्रणमुं, पृ. 208.
34. जिनचन्द्र सूरि, पार्श्व स्तवन, पृ. 209.
35. उदै रत्न, शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तवन, पृ. 210.
36. मुनि लावण्य, पार्श्व स्तुति, पृ. 211-215.
37. भावविजय, अंतरीक पार्श्वनाथ, पृ. 216-222.
38. जोरावरमल पंधोली, पार्श्वनाथ जी रो सिलोको, पृ. 223-227.
39. अमीझरा पार्श्वनाथ, पृ. 228.
40. पारस भजन, पृ. 229.
41. कमल कलससूरि, बांभणवाड पार्श्वनाथ स्तवन, पृ. 230-232.
42. साध्वी राजीमति, पार्श्व स्तुति, पृ. 233.
43. पार्श्व जिन स्तवन, पृ. 234.

44. धर्मण पार्श्वजिन स्तवन, पृ. 235.
45. भजति पार्श्व जिनं, पृ. 235.
46. नेनसिंह, गौडी पार्श्वनाथ जिनाष्टक, पृ. 236.
47. प्रार्थना पार्श्वनाथजी, पृ. 237.
48. भव भय भंजन वीर, हरषचंद, पृ. 238.
49. रुघपति, सुखदायक विरुद संभाली रे, पृ. 239.
50. श्री पार्श्वनाथ जी का ब्याहला, पृ. 240.
51. जिन चन्द्र, पार्श्वनाथ रो स्तवन, पृ. 241.
52. जैतसी, पार्श्व स्तुति, पृ. 242.
53. पंकज, तुम से लागी लगन, पृ. 243.
54. गउडि पार्श्वनाथ गीतम्, पृ. 244.
55. गुणसेन, फलवहीपार्श्वनाथ, पृ. 245.
56. जीतरंग, चिंतामणि पार्श्वनाथ, पृ. 246.
57. मोहन, संकट भंजन पार्श्वनाथ स्तवन, पृ. 247.
58. अब तोरे शरण आयो नाथ, पृ. 247.
59. लिखमीचन्द, वरकाणा पार्श्वनाथ स्तुति, पृ. 248.
60. जिणचंद, ज्यूं उपजै परम आनंद, पृ. 249.
61. वाडी पार्श्वनाथ स्तोत्र, पृ. 250.
62. आनंद घन, पार्श्वगीत, पृ. 250.
63. शोभाचंद, स्तुति प्रभु पार्श्व की, पृ. 251.
64. कनक मूर्ति, चिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन, पृ. 253.
65. लिखमीवल्लभ, कापरहेडा पार्श्वनाथ स्तवन, पृ. 254.
66. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ की आरती, पृ. 255.
67. प्रज्ञाश्रमण, पार्श्वनाथ की जय माला, पृ. 256-257.
68. मुनि देवनन्दि, अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ का चालीसा, पृ. 258-259.
69. पार्श्वप्रभु स्तवन, पृ. 260-261.
70. जे श्री पार्श्व प्रभो, पृ. 262.
71. श्री पार्श्वनाथ-छन्द, पृ. 263.
72. श्री कीर्तन पार्श्वनाथ जी का, पृ. 264.
73. विजय खुशाल, श्री पार्श्व नाथ छन्द, पृ. 265-266.
74. नमो जोड़ु हाथ सदा पार्श्वनाथ, पृ. 267-269.
75. धपाराम, चिंतामणि पार्श्व आराधना, पृ. 270.
76. चिंतामणि पार्श्व आराधना, पृ. 270.
77. पदम विजय, पंचासरा पार्श्व जिन स्तवन, पृ. 271.
78. धेतन, श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ स्तुति, पृ. 272-273.
79. पार्श्वनाथ स्तवन, पृ. 274.
80. श्री पार्श्वनाथ स्तुति, पृ. 275.
81. विद्या विलास, फलवही पार्श्वनाथ, पृ. 275.
82. पार्श्वनाथ स्तवन, पृ. 276.
83. अनंतराज आवाजी, श्री पार्श्वनाथ जिनेश्वर आरती, पृ. 277.
84. छानतराय, पार्श्वनाथ स्तोत्र, पृ. 277.
85. पारस प्रभु हरिचंद्र छंद, पृ. 278.
86. शिवराम, प्रार्थना पार्श्वनाथजी, पृ. 278.
87. दयानुनि, जिनेन्द्र श्री पार्श्वनाथजी, पृ. 279.
88. धरणेन्द्र पार्श्व स्तोत्र, पृ. 280.
89. प्रभावक सात मंत्र, पृ. 281.
90. मंगलमय मंत्र, पृ. 282.

जुलाई-सितम्बर, 1999 (खण्ड-106)

1. जैन, शान्ता, सम्पादकीय, पृ. 1-8.
2. मुनि राजेन्द्र, महावीराष्टकम्, पृ. 9-11.
3. आचार्य महाप्रज्ञ, सत्य की खोज, पृ. 12-17.
4. मुनि महेन्द्र कुमार, जैन-दर्शन और विज्ञान में अमूर्त चिन्तन, पृ. 18-26.
5. मिश्र, विश्वनाथ, आचार्य विद्यासागर प्रणीत 'निरंजन शतक' पृ. 27-34.
6. जैन, अनुपम, प्राकृत भाषा में गणितीय ग्रंथ, पृ. 35-43.
7. जैन, कुमार अनेकान्त, जैन धर्म-दर्शन में प्रतिपादित जीव तत्त्व, पृ. 44-58.
8. समणी कुसुम प्रज्ञा, आगम साहित्य में दिशा का स्वरूप, पृ. 59-64.
9. घोकरसी, कमलेश कुमार छ, भासनाटक में प्राकृत के संबंधभूत कृदन्त रूप, पृ. 65-71.
10. गर्ग, वेद प्रकाश, क्या दूषवती नदी ही गंगा थी ?, पृ. 72-85.
11. धीतलवाना, राव गणपतसिंह, सिन्धुराज का अग्रज राजा मुंज, पृ. 86-88.
12. दूगड़, बच्छराज, मानवाधिकार एवं विश्व शान्ति, पृ. 89-93.
13. शर्मा, जयचन्द्र, राजस्थानी लोक-नृत्य घूमर के कलामान, पृ. 94-96.
14. शर्मा, मनोहर, राजस्थान में लौकिक सूक्तियाँ, पृ. 97-102.
15. कुमासी, सुनन्दा, जैन दर्शन में नैतिक मान्यताएँ, पृ. 103-106.
16. पाण्डेय, हरिशंकर, दीक्षा विमर्श, पृ. 107-112.

अक्टूबर-दिसम्बर, 1999 (खण्ड-107)

1. जैन, शान्ता, सम्पादकीय, पृ. 1-6.
2. आचार्य महाप्रज्ञ, पुरुषार्थ से भाग्य बदलता है, पृ. 7-12.
3. जैन, नीरज, जीव के पांच भाव : स्वरूप, पृ. 13-23.
4. त्रिपाठी, आनन्दप्रकाश, जैन-दर्शन में इन्द्रिय स्वरूप, पृ. 24-30.
5. जैन, अशोक, आचार्य पूज्यपाद की अध्यात्म योग विषयक चिन्तन-दृष्टि, पृ. 31-36.
6. जैन, जमनालाल, कविवर बनारसीदास और रस-परम्परा, पृ. 37-50.
7. समणी मंगलप्रज्ञा, जैन परम्परा में आर्य की अवधारणा, पृ. 51-60.
8. समणी मल्लिप्रज्ञा, शांतिपूर्ण अर्थव्यवस्था निर्माण में अपरिग्रह की भूमिका, पृ. 61-70.
9. मुनि धर्मशकुमार, अनुयोग द्वार में अध्ययन-अध्यापन प्रणाली, पृ. 71-77.
10. रानी, विजया, बौद्ध दर्शन में निर्वाण, पृ. 78-84.
11. निरवान, रणधीरसिंह, पन्नाधाय सम्बन्धी भ्रान्ति का निराकरण, पृ. 85-95.
12. मुनि सुखलाल, जैन आगम प्राणी कोश, पृ. 96.

जनवरी-मार्च, 2000 (अंक-108)

1. आचार्य महाप्रज्ञ, जगल और सृष्टि की व्याख्या, पृ. 13-22.
2. प्रचंडिया, राजीव, भू-भ्रमण : भ्रान्ति और समाधान, पृ. 23-30.
3. भार्गव, दयानन्द, धर्म और कर्तव्य : आचार्य भिक्षु की दृष्टि में, पृ. 31-41.
4. जाधव, दीपक, आचार्य नेमिचन्द्र एवं उनके टीकाकार, पृ. 42-50.
5. साध्वी श्रुतयश, भाष्यकाल में स्थापना कुल, पृ. 51-58.
6. जैन, नीरज, जीव के पांच भाव - स्वरूप और समीक्षा, पृ. 59-66.
7. रामपुरिया, जतनलाल, स्थूल के माध्यम से सूक्ष्म का सन्धान, पृ. 67-71.

अप्रैल-सितम्बर, 2000 (अंक-109)

1. आचार्य महाप्रज्ञ, पदार्थ संग्रह की चेतना का पश्चिकार, पृ. 5-10.
2. जैन, फूलचन्द, दिगम्बर जैन परम्परा में संघ, गण, गच्छ, कुल और अन्य, पृ. 11-21.
3. माधवे, प्रभाकर, सन्त परम्परा की उपयोगिता, पृ. 22-30.
4. साध्वी विमलप्रज्ञा, वनस्पति : एक विमर्श, पृ. 31-40.
5. वर्मा, सुरेन्द्र, द्वन्द्व और द्वन्द्व-निवारण, पृ. 41-62.
6. जैन, कुमार अनेकान्त, आचार्य विद्यानन्दकृत नैगमनय तथा नैगमाभास के भेद-प्रभेद, पृ. 63.
7. दूगड़, बच्छराज, संघर्ष निराकरण एवं मानवाधिकार, पृ. 63-69.
8. पाण्डेय, हरिशंकर, भारतीय वाङ्मय में पुरुषार्थ, पृ. 70-76.
9. जैन, मुमुक्षु शांता, श्रावकाचार का नवाचार, पृ. 77-93.

अक्टूबर-दिसम्बर, 2000 (अंक -110)

1. आचार्य महाप्रज्ञ, जरूरी है दर्शन की सीमा का विस्तार, पृ. 9-13.
2. पौदार, रामप्रकाश, हेमचन्द्र के प्राकृत-व्याकरण के अपभ्रंश उदाहरण-पद्यों के भाषान्तर का पुनरीक्षण, पृ. 14-22.
3. मेहता, संगीता, अनेकान्त का आध्यात्मिक पक्ष स्याद्वादमंजरी के परिप्रेक्ष्य में, पृ. 23-28.
4. समणी मंगलप्रज्ञा, ऋषभायण में राज्य-व्यवस्था, पृ. 29-39.
5. मुनि मदन कुमार, जैन दर्शन में चेतना के विकास की अवधारणा, पृ. 40-44.
6. जैन, अशोक कुमार, श्रावकाचार की सामाजिक उपयोगिता, पृ. 45-51.
7. भारद्वाज, गोपाल, सर्वसार उपनिषद्... पद्यानुवाद, पृ. 52-56.
8. जैन, जिनेन्द्र, जैन ग्रन्थों में वर्णित भगवान पार्श्व के कतिपय विचारणीय प्रसंग, पृ. 57-61.
9. शाह, प्रद्युम्न, भारतीय न्यायशास्त्र में अवयव-विमर्श, पृ. 62-68.
10. लाटा, प्रमोद कुमार, पाण्डुलिपि विवेकमंजरी प्रकरण एक अध्ययन, पृ. 69-78.
11. जैन, निहालचन्द, पंचाणुव्रतों में शिक्षा मूल्य और सामयिक सन्दर्भ, पृ. 79-83.

जनवरी - जून, 2001 (अंक-111-112)

1. आचार्य महाप्रज्ञ, समाज व्यवस्था और धर्म के प्रयोग, पृ. 1-4.
2. साध्वी गवेषणा, जैन दर्शन में क्रियावाद का दार्शनिक स्वरूप, पृ. 5-17.
3. जैन, अनिल कुमार, जैन दर्शन में सूक्ष्म जीवों की स्थिति, पृ. 18-30.
4. त्रिपाठी, आनन्द प्रकाश, श्वेताम्बर जैनग्रन्थद्रव्यानुयोग तर्कणा में पर्याय का स्वरूप, पृ. 31-36.
5. सूरिदेव, श्रीरंजन, प्राकृत भाषा : स्वरूप, विमर्श एवं विकास, पृ. 37-48.
6. शर्मा, गोपाल, हास्यार्णव प्रहसनमहास्य रस की पृष्ठभूमि में, पृ. 49-56.
7. पंडित, सुरेश, शिक्षा में मूल्यों की प्रतिष्ठा, पृ. 57-60.
8. समणी सत्यप्रज्ञा, जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में मूल्य चिन्तन, पृ. 61-66.
9. रामपुरिया, जतनलाल, ऋषभायण : भारतीय संस्कृति के आदि सर्ग की दिव्य परिक्रमा, पृ. 67-90.
10. दूगड़, बच्छराज, पराशर स्मृति में अहिंसा, पृ. 91-95.
11. शास्त्री, नलिन, पर्यावरणीय चिन्तन आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य में, पृ. 96-101.
12. मिश्र, अभिराज राजेन्द्र, अखण्ड मानवता का आन्दोलन-अणुव्रत, पृ. 102-107.
13. साध्वी जतनकुमारी, पुनर्जन्म और जाति स्मृति, पृ. 108-117.

जुलाई -दिसम्बर, 2001 (अंक-113-114)

- 1 आचार्य महाप्रज्ञ, नये वर्ष पर विश्व के नाम संदेश, पृ. 1-4.
- 2 मुमुक्षु शान्ता जैन, अनेकान्त की सार्थक प्रस्तुति, पृ. 5-7.
- 3 आचार्य महाप्रज्ञ, अनेकान्तवाद, पृ. 8-14.
- 4 जैन, सागरमल, भारतीय दार्शनिक चिन्तन में अनेकान्त, पृ. 15-31.
- 5 भार्गव, दयानन्द, क्या वेदान्त को अनेकान्त किसी अंश में स्वीकार्य हो सकता है?, पृ. 32-38.
- 6 सरकार, तुषार कान्ति, अनेकान्तवाद - एक विवेचन, पृ. 37-38.
- 7 जैन, अशोक कुमार, भगवान महावीर और अनेकान्तवाद, पृ. 39-47.
- 8 भंडारी, मोहनसिंह, अनेकान्तवाद और उसके प्रयोग, पृ. 48-55.
- 9 दूगड़, बच्छराज, पारिवारिक शान्ति और अनेकान्त, पृ. 56-64.
- 10 पटवा, शुभू, महावीर का अनेकान्त : सामाजिक विमर्श, पृ. 65-70.
- 11 जैन, सुदीप, वैचारिक सहिष्णुता का सिद्धान्त : अनेकान्त, पृ. 71-76.
- 12 बोलिया, हेमलता, वर्तमान समस्याओं के समाधान में अनेकान्त का सामाजिक पक्ष, पृ. 77-82.
- 13 साध्वी आरोग्यश्री, शान्त-सहवास में अनेकान्त की भूमिका, पृ. 83-87.
- 14 जैन, श्रीमती रंजना, अनेकान्त का सामाजिक पक्ष, पृ. 88-92.
- 15 भट्ट, सिद्धेश्वर, अनेकान्त की प्रासंगिकता, पृ. 93-95.
- 16 भारद्वाज, गोपाल, महावीर का अनेकान्त : कुछ पक्ष, कुछ प्रश्न, पृ. 96-101.

जनवरी - मार्च, 2002 (अंक-115)

- 1 जैन, नीरज, जैनधर्म का प्राण-तत्त्व : अहिंसा, पृ. 1-14.
- 2 दूगड़, बच्छराज, अहिंसा-एक समग्र चिन्तन, पृ. 15-26.
- 3 भण्डारी, कुसुम, भारतीय संस्कृति में अहिंसा व शांति का संदेश, पृ. 27-35.
- 4 जैन, प्राचार्य निहालचंद, जैन संस्कृति एवं पर्यावरण-संरक्षण, पृ. 36-40.
- 5 जैन, अजित, 'जलज', अहिंसा की वैज्ञानिक आवश्यकता और उन्नति के उपाय, पृ. 41-47.
- 6 कर्णावट, चान्दमल, अहिंसा का विभिन्न रूपों का व्यवहारपरक विश्लेषण एवं शिक्षण, पृ. 48-50.
- 7 शुक्ला, रजनीश, आधुनिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में भगवान् महावीर का चिन्तन, पृ. 57-57.
- 8 गुर्जर, राजेन्द्रसिंह, गांधी-चिन्तन में अहिंसा, पृ. 58-62.
- 9 समणी कुसुमप्रज्ञा, नेतृत्व में अनेकान्त का प्रयोग, पृ. 63-68.
- 10 साध्वी वर्धमानश्री, नेतृत्व में अनेकान्त दृष्टि का विकास, पृ. 69-72.

अप्रैल - सितम्बर, 2002 (अंक-116-117)

- 1 समणी मंगलप्रज्ञा, जैन दर्शन में विश्व की अवधारणा, पृ. 3-14.
- 2 जैन, अशोक कुमार, सम्यग् व्यवहार में अनेकान्तदृष्टि, पृ. 15-22.
- 3 पाण्डेय, हरिशंकर, अर्द्धमागधी आगमों में उपचार वक्रता, पृ. 23-32.
- 4 जैन साध्वी मधुबाला, अपभ्रंश भाषा और साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, पृ. 33-40.
- 5 जैन, अनेकान्त कुमार, जैन दर्शन में 'नय' सिद्धान्त का उद्भव, पृ. 41-46.
- 6 बोलिया, हेमलता, जैन साधना पद्धति : मनोनुशासनम्, पृ. 47-54.
- 7 त्रिपाठी, आनन्दप्रकाश, 'रत्नेश', महर्षि पाराशर का नैतिक दर्शन, पृ. 55-60.
- 8 जैन, जिनेन्द्र, आचार्य हरिभद्र की समन्वयात्मक दृष्टि, पृ. 61-66.
- 9 साध्वी पोयूषप्रभा, साधना के दो तट : उत्सर्ग और अपवाद, पृ. 67-72.
- 10 वर्मा (सोनी), प्रकाश, संस्कृत जैन स्तोत्र काव्य, पृ. 72-86.

अक्टूबर - दिसम्बर, 2002 (अंक-118)

- 1 भार्गव, प्रोफेसर दयानन्द, 'महाप्रज्ञ दर्शन' में दृष्टि-परिवर्तन, पृ. 3-14.
- 2 आचार्य महाप्रज्ञ, विद्युत्: सचित या अचित?, पृ. 15-28.
- 3 जैन, प्रोफेसर प्रेम सुमन, भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का सामाजिक सरोकार, पृ. 29-38.
- 4 समणी अमितप्रज्ञा, उत्तराध्ययन में प्रतीक, पृ. 39-52.
- 5 साध्वी श्रुत्यशा, कर्मबंध की प्रक्रिया, पृ. 53-62.
- 6 साध्वी आरोग्यश्री, नाम कर्म और शरीर रचना विज्ञान, पृ. 63-68.
- 7 जैन, रमेशचन्द्र, प्राकृत ग्रंथों में कर्मसिद्धान्त का विश्लेषण, पृ. 69-80.
- 8 मुनि मदनकुमार, जैन दर्शन में गुणस्थान, पृ. 81-83.
- 9 माथुर, मनमोहन स्वरूप, जैन साहित्य और दर्शन की प्रासंगिकता, पृ. 84-91.
- 10 श्रीमाल, मनोज कुमार, ज्योतिष-विद्या को जैनचार्यों का अवदान, पृ. 92-98.

जनवरी - मार्च, 2003 (अंक-119)

- 1 समणी मंगलप्रज्ञा, पुद्गलास्तिकाय एक विमर्श, पृ. 1-20.
- 2 जैन, अनेकान्त कुमार, अनुयोगद्वार सूत्र में नय विवेचना, पृ. 21-30.
- 3 जैन, अशोक कुमार, जैन कर्म सिद्धान्त में अनेकान्त, पृ. 31-41.
- 4 जैन, जिनेन्द्र, प्राकृत कथा साहित्य : उद्भव, विकास एवं व्यापकता, पृ. 42-48.
- 5 साध्वी मुदितयशा, आत्म-समाधि और वैयावत्य, पृ. 49-58.
- 6 मिश्र, पं. विश्वनाथ, उत्तराध्ययन और गीता में समानता, पृ. 59-64.
- 7 सिंघवी, नन्दिता, जलों की महत्ता एवं संरक्षण वैदिक अवधारणा, पृ. 65-69.
- 8 पाण्डेय, विनोद कुमार, ध्यान का स्वरूप एवं महत्त्व तत्त्वार्थसूत्र, पृ. 70-75.

अप्रैल - सितम्बर, 2003 (अंक-120-121)

- 1 गेलड़ा, महावीर राज, महाप्रज्ञ का प्रतिपक्ष का सिद्धान्त, पृ. 5-12.
- 2 पाण्डेय, हरिशंकर, जैन-अर्द्धमागधी आगम साहित्य में चित्रकला, पृ. 13-19.
- 3 दूगड़, बच्छराज, उच्च शिक्षा का बदलता परिदृश्य, पृ. 20-27.
- 4 मुनि महेन्द्र कुमार, क्या विद्युत् (इलेक्ट्रीसिटी) सचित तैउकाय है?, पृ. 28-39.
- 5 सोनकर, अनिल कुमार, 'आवश्यक सूत्र' में आचार मीमांसा और उसकी प्रासंगिकता, पृ. 40-107.

अक्टूबर - दिसम्बर, 2003 (अंक-122)

- 1 जैन, अनेकान्त कुमार, विआहपण्णत्ती में नय सिद्धान्त का विवेचन, पृ. 5-10.
- 2 सोनकर, अनिल कुमार, 'आवश्यक सूत्र' में आचार मीमांसा, पृ. 11-22.
- 3 मिश्र, श्रीमती राजेश्वरी, 'राजश्री', अर्द्धमागधी आगमों में संस्कार, पृ. 23-27.
- 4 मुनि महेन्द्र कुमार, क्या विद्युत् (इलेक्ट्रीसिटी) सचित तैउकाय है?, पृ. 28-68.

जनवरी - मार्च, 2004 (अंक-123)

- 1 भार्गव, दयानन्द, जीव का क्रमिक विकास : जैन तथा वैदिक दृष्टि, पृ. 1-6.
- 2 पाण्डेय, हरिशंकर, जैन अर्द्धमागधी आगम में प्रसाधन कला, पृ. 7-20.
- 3 समणी सत्यप्रज्ञा, स्वप्नों का रहस्यमय संसार, पृ. 21-26.
- 4 कुमारी, राधा, शांति : अवधारणा एवं गांधीय दृष्टिकोण, पृ. 27-35.
- 5 सोनी, अरुणा विन्ध्यगिरि की जैन कला की महत्ता, पृ. 36-41.
- 6 मुनि महेन्द्र, क्या विद्युत् (इलेक्ट्रीसिटी) सचित तैउकाय है?, पृ. 42-83.

अप्रैल - जून, 2004 (अंक-124)

- 1 दूगड़, बच्छराज, सामाजिक समानता बनाम राजनैतिक स्थिरता, पृ. 1-6.
- 2 देवी, श्रीमती उर्मिला, अरविन्द साहित्य और मनोनुशासनम् में आत्म तत्त्व, पृ. 7-14.
- 3 जैन, अनिल कुमार, वृद्धावस्था तथा मृत्यु क्यों आते हैं?, पृ. 15-18.
- 4 सहाय, निरंजन, वली है रस्म की कोई सर उठा के न चले, पृ. 19-35.
- 5 कुमार, मुनि महेन्द्र, क्या विद्युत (इलेक्ट्रीसिटी) सचित तैउकाय है ?, पृ. 36-82.

जुलाई - दिसम्बर, 2004 (अंक-125-126)

- 1 जैन, धर्मचन्द्र, तत्त्वार्थसूत्र का पूरक ग्रन्थ - जैन सिद्धान्त दीपिका, पृ. 1-15.
- 2 पन्त, कमला, कुमार्ज में जैन और बौद्ध धर्मों का प्रभाव, पृ. 16-22.
- 3 कुमार, मुनि महेन्द्र, क्या विद्युत (इलेक्ट्रीसिटी) सचित तैउकाय है ?, पृ. 23-66.

जनवरी- मार्च, 2005 (अंक-127)

- 1 जैन, सागरमल, भगवान महावीर का जन्म स्थल : एक पुनर्विचार, पृ. 1-12.
- 2 प्रेमी, फूलचन्द, जैन धर्म में सम्यग्ज्ञान : स्वरूप और महत्त्व, पृ. 13-22.
- 3 जैन, अशोक कुमार, जैन परम्परा में विनय की अवधारणा, पृ. 23-30.
- 4 समणी मंगलप्रज्ञा, त्रिगुण का आधार : विकास की यात्रा, पृ. 31-42.
- 5 राव, सूरजमल, मानवीय चिन्तन में परमसत्ता, पृ. 43-53.
- 6 सिंह, अतुलकुमार प्रसाद, शास्त्रवार्तासमुच्चय में ईश्वरकर्तृत्ववाद, पृ. 54-59.

अप्रैल- जून, 2005, (अंक-128)

- 1 गेलड़ा, महावीरराज, तमस्काय और ब्लेक होल, पृ. 1-7.
- 2 रामपुरिया, जतनलाल, अर्थ और अर्थ-छाया, पृ. 8-11.
- 3 पटोरिया, कुसुम, जैन ध्वनि सिद्धान्त पदार्थ विज्ञान, पृ. 12-17.
- 4 समणी मल्लिप्रज्ञा, कर्म सिद्धान्त और आरोग्य-विज्ञान, पृ. 18-28.
- 5 नाहर, वीरेन्द्र, मध्यलोक-एक युक्तिमूलक निष्पादन, पृ. 29-39.
- 6 मुनि मदन कुमार, चौदह गुणस्थान : एक विमर्श, पृ. 40-47.
- 7 समणी सत्यप्रज्ञा, सकारात्मक सुख की ओर, पृ. 48-54.
- 8 जैन, शान्ता जन-धर्म का मनोवैज्ञानिक पक्ष, पृ. 55-66.

जुलाई- दिसम्बर, 2005 (अंक-129)

- 1 जैन, प्रेमसुमन, श्रावकाचार आचार, आहार और विचार का विवेक, पृ. 1-14.
- 2 शाह, जितेन्द्र बी., श्रावकाचार तब और अब, पृ. 15-20.
- 3 जैन, सागरमल, श्रावक-आचार की प्रासंगिकता का प्रश्न, पृ. 21-45.
- 4 जैन, धर्मचन्द्र, परिग्रह परिमाण व्रत आज भी प्रासंगिक है, पृ. 46-52.
- 5 जैन, अनेकांत कुमार, आधुनिक युग में श्रावकाचार का अस्तित्व, पृ. 53-62.
- 6 जैन, श्रीमती सरोज, गृहस्थाचार-परिपालन में नारी की भूमिका, पृ. 63-73.
- 7 जैन, शेखरचन्द्र, श्रावकाचार, गुण लक्षण और अनुव्रत, पृ. 74-81.
- 8 जैन, अशोक कुमार, श्रावकाचार और रात्रि भोजन विरमण व्रत, पृ. 82-90.

जनवरी- मार्च, 2006 (अंक-130)

- 1 जैन, जिनेन्द्र, जैन धर्म में व्रताराधना : आर्थिक व्यवस्था के सन्दर्भ, पृ. 1-12.
- 2 जैन, अनुपम, जैन अर्द्धमागधी आगमों में निहित गणित, पृ. 13-24.
- 3 समणी कुसुम प्रज्ञा, स्वप्न-विज्ञान, पृ. 25-40.
- 4 जैन, प्रोफेसर भागचन्द्र, जैन संस्कृति की मूल अवधारणा, पृ. 41-68.
- 5 तातेड़, सोहनराज, जैन कर्म-सिद्धान्त और वंश-परम्परा विज्ञान, पृ. 69-80.
- 6 शुक्ला, रजनीश, पालि-प्राकृत मुक्तक काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 81-86.

अप्रैल- जून, 2006 (अंक-131)

- 1 जैन, सागरमल, जैन तत्त्वमीमांसा की विकासयात्रा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में, पृ. 1-10.
- 2 पाण्डेय, हरिशंकर, जैन षष्ठमंगल - एक विवेचन, पृ. 11-26.
- 3 त्रिपाठी, आनन्दप्रकाश, भारतीय दर्शन में कारण-कार्यवाद, पृ. 27-38.
- 4 कुमार, मुनि विनोद, जैन आगमों में वाणी-विवेक के सूत्र, पृ. 39-50.
- 5 जैन, योगेश कुमार, भारतीय संस्कृति में श्रमण संस्कृति का योगदान, पृ. 51-60.
- 6 राठी, ओम कंवर, गाँधी एवं मार्क्स : एक विश्लेषण, पृ. 61-75.

जुलाई- दिसम्बर, 2006 (अंक 132-133)

- 1 भार्गव, दयानन्द, सापेक्षता और अनेकांत : विज्ञान और दर्शन, पृ. 1-20.
- 2 जैन, प्रेमसुमन, पुरुषार्थसिद्धयुपाय में अहिंसा-विमर्श, पृ. 21-32.
- 3 रामपुरिया, जतनलाल, नर-लोक से किन्नर-लोक तक, पृ. 33-40.
- 4 साध्वी श्रुतयश, सिद्धों के अनेक भेदों का प्रतिपादन, पृ. 41-48.
- 5 अग्रवाल, पारसमल, भगवती आराधना में निदान वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में, पृ. 47-55.
- 6 पी. शाह, उमाकान्त, तीर्थंकरों की मूर्तियों पर उकेरित चिन्ह, पृ. 56-62.
- 7 जैन, सुश्री श्वेता, कारण का स्वरूप : जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में, पृ. 63-71.
- 8 जैन, सुमत, अपरिग्रह एवं उसका लोकोपकारी स्वरूप, पृ. 72-79.

जनवरी- मार्च, 2007 (अंक-134)

- 1 जैन, अशोक कुमार, आचारांग में प्रतिपादित व्रत-मीमांसा, पृ. 1-14.
- 2 समणी कुसुमप्रज्ञा, आवश्यक सूत्र : एक विमर्श, पृ. 15-22.
- 3 दूगड़, बच्छराज, स्वदेशी आन्दोलन, पृ. 23-29.
- 4 साध्वी नगीना, संवेग और संवेग नियंत्रण की प्रक्रिया, पृ. 30-40.
- 5 समणी सत्यप्रज्ञा, साधना का सिद्धि-सोपान ज्ञानाराधना, पृ. 41-60.
- 6 जैन, विवेकानन्द, सराफ, संजीव, जैन, प्रीति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जैन धर्म एवं दर्शन पर शोध कार्य, पृ. 61-68.

अप्रैल- सितम्बर, 2007 (अंक-135-136)

- 1 मुनि बुद्धमल्ल, श्री जिनस्तव, पृ. 55-56.
- 2 जैन, धर्मचन्द्र, अनेकान्तवाद के तार्किक आधार, पृ. 57-66.
- 3 जैन, उदयचन्द्र, जैन संस्कृत व्याकरण और उनका योगदान, पृ. 67-71.
- 4 साध्वी राजीमती, अध्यात्म-विकास की आगमिक भूमिकाएं, पृ. 72-83.
- 5 हरिशंकर पाण्डेय, नारी - पर्याय विमर्श, पृ. 84-95.
- 6 सिंह, प्रद्युम्नशाह, जैन बौद्ध न्याय में अनुमान प्रमाण, पृ. 96-100.
- 7 तालेड़, सोहनराज, जैन दर्शन और विज्ञान में जीव विकास, पृ. 101-111.
- 8 राय, सूरजमल, भारतीय भाषाओं के विकास में बुद्ध का योगदान, पृ. 112-116.

अक्टूबर- दिसम्बर, 2007 (अंक-137)

- 1 मिश्र, विश्वनाथ, सत् का निर्वचन, पृ. 1-3.
- 2 जैन, भागचन्द्र, भास्कर, तमिलनाडु और कर्णाटक के जैन शिलालेख, पृ. 4-24.
- 3 सोनी, सुरेन्द्र डी., जीतेन्द्र डी. सोनी, गाँधी की अहिंसक अर्थव्यवस्था, पृ. 25-38.
- 4 समणी संगीताप्रज्ञा, महाकवि कालिदास की सूक्तियाँ, पृ. 37-47.
- 5 जैन, योगेश कुमार, जैन न्याय परम्परा और आचार्य प्रभाचन्द्र, पृ. 48-56.

जनवरी- मार्च, 2008 (अंक-138)

- 1 आचार्य महाप्रज्ञ, दार्शनिक के लिए जरूरी है प्रयोगशाला, पृ. 5-6.
- 2 आचार्य महाप्रज्ञ, सृष्टिवाद, पृ. 7-13.
- 3 शास्त्री, दामोदर, भारतीय दर्शनों में किया एक विहंगम दृष्टि, पृ. 14-34.
- 4 साध्वी शुभ्रयश, जैन वाङ्मय व्यवहार भाष्य में विकित्सा पद्धति, पृ. 35-42.
- 5 साध्वी श्रुतयश, निरीथ एवं उसके व्याख्या साहित्य में भारतीय आर्थिक स्थिति, पृ. 43-52.

अप्रैल- जून, 2008 (अंक-139)

- 1 आचार्य महाप्रज्ञ, सृष्टिवाद का नया आयाम, पृ. 42-55.
- 2 दयानन्द भार्गव, आचार्य भिक्षु का दर्शन : अहिंसा के विशेष सन्दर्भ में, पृ. 56-73.
- 3 विजयपाल शास्त्री, काव्यप्रकाश-संकेतकार आचार्य माणिक्यचन्द्र रूरी के स्वरचित उदाहरण, पृ. 74-82.

जुलाई- सितम्बर, 2008 (अंक-140)

- 1 आचार्य महाप्रज्ञ, अः एक अनुशीलन, पृ. 43-54.
- 2 जैन, प्रोफेसर सागरमल, षट् जीविकाय की अवधारणा : एक विश्लेषण, पृ. 55-62.
- 3 जैन, अनुपम एवं मिश्रा, सुरेखा, जैन ग्रंथ भंडारी में संग्रहीत गणितीय पांडुलिपियाँ, पृ. 63-70.
- 4 साध्वी मुदितयश, नायाधम्मकहाओ में भारतीय संस्कृति : एक विमर्श, पृ. 71-82.
- 5 साध्वी प्रवीणलता, श्रावक का आचार, पृ. 82-92.

अक्टूबर- दिसम्बर, 2008 (अंक-141)

- 1 आचार्य महाप्रज्ञ, अहिंसा का स्रोत, पृ. 55-64.
- 2 भार्गव, दयानन्द षट्जीविकाय के प्रति वैदिक दृष्टि, पृ. 65-69.
- 3 सराफ, संजीव, जैन शास्त्रों में वर्णित विज्ञान की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता एवं महत्त्व, पृ. 70-78.
- 4 जैन, एच. सी., प्राकृत साहित्य में अहिंसा सम्बन्धी कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 79-83.
- 5 जैन, वीरसागर, जैन न्याय ग्रन्थों का सूचीकरण, पृ. 84-89.

जनवरी- मार्च, 2009 (अंक-142)

- 1 आचार्य महाप्रज्ञ, मृत्यु का दर्शन : सामधिमरण, पृ. 5-12.
- 2 जैन, सागरमल जैन आगमों में समाधिमरण की अवधारणा, पृ. 13-24.
- 3 फूलचन्द जैन प्रेमी, संल्लेखना : मृत्यु को महोत्सव बनाने की अनुपम कला, पृ. 25-32.
- 4 मुनि मदन कुमार, जैन दर्शन में अनशन का मूल्य, पृ. 33-44.
- 5 जैन, अनेकान्त कुमार, संल्लेखना : साधना और संविधान, पृ. 45-58.

अप्रैल- जून, 2009 (अंक-143)

- 1 भार्गव, दयानन्द, स्वस्थ समाज : पर्यावरण की सुरक्षा, पृ. 5-9.
- 2 भार्गव, दयानन्द, विसर्जन-दर्शन, पृ. 10-15.
- 3 जैन, श्रेयांस कुमार, संस्कृत जैन सन्धानकाव्य : अनुशीलन, पृ. 16-22.
- 4 साध्वी शुभप्रभा, जैनदर्शन में जीव विकास, पृ. 23-28.
- 5 दूगड, बच्छराज, आचार्य महाप्रज्ञ प्रणीत शांति की अवधारणा, पृ. 29-38.
- 6 जैन, अमयकुमार, श्रुताराधना : स्वाध्याय का महत्त्वपूर्ण आयाम, पृ. 39-47.
- 7 समणी विपुलप्रज्ञा, दर्शन एवं विज्ञान जगत में स्यादवाद सापेक्षवाद का महत्त्व, पृ. 48-53.
- 8 कुदाल, मानमल, पर्यावरण की रक्षार्थ-जैन दर्शन के आदर्श, पृ. 54-57.

जुलाई- सितम्बर, 2009 (अंक-144)

- 1 मिश्र, अभिराजराजेन्द्र, भारतीय धर्म दर्शन में सर्वधर्मसमभाव—एक समीक्षा, पृ. 5-13.
- 2 जैन, श्वेता, सम्मतिर्क में कार्य-कारणवाद का स्वरूप, पृ. 14-23.
- 3 झा, विजय कुमार, जैन संस्कृत पुराणों के परिप्रेक्ष्य में राज्य-उत्पत्ति की अवधारणा, पृ. 24-38.
- 4 भार्गव, दयानन्द, अनुसंधान की दिशा में एक ज्वलन्त प्रश्न : क्या जैन समाज परिग्रही है?, पृ. 39-42.
- 5 कुमार, विजय, मानवीय एकता के सन्दर्भ में अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह की भूमिका, पृ. 43-50.
- 6 जैन, डॉली, श्रीमद्भगवद्गीता एवं निष्काम कर्म योग—एक विवेचन, पृ. 51-58.

अक्टूबर- दिसम्बर, 2009 (अंक-145)

- 1 भार्गव, दयानन्द, धर्म सापेक्ष अर्थनीति पर आधृत समाज का मॉडल, पृ. 5-12.
- 2 जैन, सागरमल, परिशिष्ट पर्व एक परिचय, पृ. 13-17.
- 3 जैन, पी.सी., पर्यावरण संतुलन और जैन सिद्धान्त, पृ. 18-27.
- 4 शर्मा, पूजा, जैन पर्यावरण में संरक्षण, पृ. 28-39.

जनवरी- मार्च, 2010 (अंक-146)

- 1 शास्त्री, दामोदर, समयसार की उपयोगिता : पुरुषार्थों के परिप्रेक्ष्य में, पृ. 5-14.
- 2 साध्वी शुश्रूषा, नय एक विश्लेषण, पृ. 15-22.
- 3 जैन, अशोक कुमार, जैन न्याय परम्परा में भिक्षुन्यायकर्मिका का वैशिष्ट्य प्रथम एशियाई-दर्शन सम्मेलन, पृ. 23-31.
- 4 दयानन्द भार्गव, सौहार्द-भाव बनाइये और भेद-भाव मिटाइये, पृ. 32-35.

अप्रैल- जून, 2010 (अंक-147)

- 1 शर्मा, सत्य प्रकाश, जैन धर्म - हिन्दू धर्म, पृ. 46-53.
- 2 जैन, अनेकान्त कुमार, अहिंसा की आध्यात्मिक सूक्ष्म व्याख्या, पृ. 54-62.
- 3 पटोदिया, कुसुम, भारतीय दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में जैन-दर्शन में सामान्य की संकल्पना, पृ. 63-67.
- 4 मेहता, वन्दना, जैन आगमों में शिक्षा पद्धति, पृ. 68-77.
- 5 जैन, एच.सी., प्राकृत साहित्य में शालभंजिका एक अध्ययन, पृ. 78-81.
- 6 जैन, दर्शना, बंध के प्रकार एवं कारण, पृ. 82-96.

जुलाई- दिसम्बर, 2010 (अंक-148-149)

- 1 स्याद्धाद और जगत्, पृ. 70-96.
- 2 आत्मवाद के विविध पहलू, पृ. 97-105.
- 3 प्रतिक्रियावाद : कर्म, पृ. 106-114.
- 4 समाजवाद में कर्मवाद का मूल्यांकन, पृ. 115-122.
- 5 संस्कृत-साहित्य : एक दृष्टि, पृ. 123-131.
- 6 पर्यावरण और अर्थशास्त्र, पृ. 132-140.
- 7 आचार्य महाप्रज्ञ का प्रकाशित साहित्य , पृ. 141-144.

जनवरी- मार्च, 2011 (अंक-150)

- 1 आचार्य महाप्रज्ञ, चंचलता का स्थिरीकरण कैसे हो?, पृ. 81-92.
- 2 सिंह, रामजी, विश्व शांति के प्रति जैन-धर्म का अवदान, पृ. 93-100.
- 3 जैन, सतेन्द्र कुमार, जीव एवं पुद्गल द्रव्य की वैज्ञानिक विवेचना, पृ. 101-112.

अप्रैल- जून, 2011 (अंक-151)

- 1 जैन, अशोक कुमार, तत्त्वार्थवार्तिक में प्रतिपादित केवलज्ञान और सर्वज्ञता, पृ. 5-14.
- 2 समणी सत्यप्रज्ञा, आचार्य महाप्रज्ञ का आर्थिक चिंतन, पृ. 15-22.
- 3 मुनि अक्षय कुमार, आचार्य महाप्रज्ञ की अर्थशास्त्रीय अवधारणा, पृ. 23-26.
- 4 साध्वी श्रुतयज्ञा, भारतीय दर्शनों में इन्द्रिय प्रत्यक्ष, पृ. 27-40.
- 5 भार्गव, दयानन्द, आचार्य तुलसी प्रथम संस्थापक अनुशास्ता : जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय के, पृ. 41-46.
- 6 जैन, शांता, आदि पुराण में भगवान ऋषभ का चरित्र, पृ. 47-59.

जुलाई- दिसम्बर, 2011 (अंक-152)

- 1 जैन, अनिल, युक्त्यनुशासनालंकार में प्रतिपादित सर्वज्ञ का स्वरूप, पृ. 65-74.
- 2 सिंह, अतुल कुमार, प्रकीर्णक साहित्य : एक अवलोकन, पृ. 75-92.
- 3 जैन, अनेकान्त कुमार, हरिवंश पुराण में प्रतिपादित विविध तपों का गणितीय वैशिष्ट्य, पृ. 93-101.
- 4 शेखावत, राजवीरसिंह, न्याय-दर्शन में व्याप्ति की अवधारणा, पृ. 102-111.
- 5 जैन, रतनलाल, मोहनीय कर्म एवं मूल प्रवृत्तियां तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 112-120.

जनवरी- मार्च, 2012 (अंक-153)

- 1 महता, वन्दना, ब्राह्मी लिपि का उद्भव एवं प्राकृत से सम्बन्ध, पृ. 70-78.
- 2 जैन, वीरसागर, जैन दर्शन की व्यावहारिकता, पृ. 79-93.
- 3 पाण्डेय, विनोद कुमार, अश्रुवीणा का गीतिकाव्य, पृ. 94-101.
- 4 शास्त्री, दामोदर, इतिहासियाई (ऋषिभाषितानि) (पुरतक समीक्षा), पृ. 101-104.

अप्रैल - जून, 2012 (अंक-154)

- 1 राठीड़, रविन्द्र सिंह, भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और गौधी, पृ. 75-85.
- 2 बिश्नोई, किशनाराम, वेदों में प्रकृति संरक्षण की प्रासंगिकता, पृ. 86-93.
- 3 कर्णाघट, चांदमल, चन्दनबाला मारु, नैतिकता का विकास : जैन दृष्टि, पृ. 94-104.

जुलाई- दिसम्बर, 2012 (अंक-155)

- 1 जैन, अनेकान्त कुमार, षट्खंडागम में नय सिद्धान्त के प्रयोग, पृ. 94-106.
- 2 अंजना, संस्कृत रूपकों में जनवादी चेतना, पृ. 107-118.
- 3 सिंह, शंभुनाथ, जैन साहित्य कण्ठचरिय में वर्णित कृष्णकथा का समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 119-127.
- 4 समणी संगीत प्रज्ञा, महाकवि कालिदास विरचित 'मेघदूतम्' एवं मेरुतुडाचार्यकृत जैनमेघदूतम् की समीक्षा, पृ. 128-149.
- 5 त्रिपाठी, आनन्दप्रकाश, तत्त्वार्थवार्तिक के आधार पर सांख्य के सिद्धान्तों की समीक्षा, पृ. 150-160.

जनवरी- मार्च, 2013 (अंक-156)

- 1 साध्वी श्रुतयज्ञा, जैन साहित्य में अंक गणित के बीज, पृ. 49-57.
- 2 मुनि किशनलाल, अनुयोग और उनके द्वार, पृ. 58-68.
- 3 चौधरी, विनोद, साध्य-साधन की एकरूपता, पृ. 69-79.
- 4 शुक्ल, रजनीश, संस्कृत-पालि-प्राकृत कथाओं में अन्तः सम्बन्ध, पृ. 80-96.

अप्रैल- जून, 2013 (अंक-157)

- 1 समणी आगमप्रज्ञा, वाक्य और अर्थ : एक विश्लेषण, पृ. 75-81.
- 2 समणी शारदा प्रज्ञा, सत्य क्या ? द्वैत या अद्वैत : महाप्रज्ञा दृष्टि, पृ. 82-87.
- 3 दाधीच, जुगल कुमार, शांति की अवधारणा एवं गांधी दृष्टिकोण, 88-96.

जुलाई- दिसम्बर, 2013 (अंक-158-159)

- 1 आचार्य महाश्रमण, आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर प्रस्तुत विनयांजलि, पृ. 9-11.
- 2 साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, अभिवन्दना युगपुरुष की, पृ. 12-20.
- 3 अभिराजराजेन्द्र मिश्र, तुलसीप्रशस्तिशतकम्, पृ. 21-29.
- 4 समणी कुसुमप्रज्ञा, अहिंसा और विश्वशांति, पृ. 30-33.
- 5 जैन, प्रेमसुमन, आचार्य तुलसी का अहिंसा चिंतन और समाज, पृ. 34-46.
- 6 दूगड, बच्छराज, शांति की अवधारणा और विश्वशांति का मार्ग आचार्य तुलसी दृष्टि, पृ. 47-53.
- 7 जैन सुदीप कुमार, प्राकृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में आचार्य तुलसी का अवदान, पृ. 54-58.
- 8 जैन, धर्मचन्द, जैन विद्या शिक्षा के अद्वितीय प्रणेता : आचार्यश्री तुलसी, पृ. 59-64.
- 9 कल्ला, नंदलाल, गुरुवर्य तुलसी- 'प्रज्ञा' का वैश्विक फलक, पृ. 65-67.
- 10 कर्णावट, महेन्द्र, सामाजिक परिवर्तन और नया मोड़, पृ. 68-83.
- 11 साध्वी विमलप्रज्ञा, पूर्वाचार्यों के पथ पर : आचार्य तुलसी, पृ. 84-89.
- 12 साध्वी श्रुतयशा, कालूयशोविलास में तत्त्व निरूपण, पृ. 90-96.
- 13 साध्वी अक्षयप्रभा, राजस्थानी लोकगीतों को आचार्य तुलसी का योगदान, पृ. 97-104.
- 14 त्रिपाठी, आनन्दप्रकाश, आचार्य तुलसी का शिक्षा दर्शन, पृ. 105-116.
- 15 जैन, बी.एल, आचार्य तुलसी का विद्यार्थियों में सुधार एवं विकास में योगदान, पृ. 117-120.
- 16 प्रधान, विजेन्द्र, महिला सशक्तिकरण में आचार्यश्री तुलसी का योगदान, पृ. 121-125.
- 17 जैन, बबीता, आचार्य तुलसी के सामाजिक सरोकार, पृ. 126-133.
- 18 जैन, अनेकान्त कुमार, अनैतिकता और भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में आचार्य तुलसी के विचार, पृ. 134-140.
- 19 समणी संगीतप्रज्ञा, आचार्य श्री तुलसी का संस्कृत स्तोत्र काव्य : एक अनुशीलन, पृ. 141-144.
- 20 दाधीच, जुगल किशोर, आचार्य तुलसी के सपनों का लोकतंत्र, पृ. 145-149.
- 21 मेहता, वन्दना, जैन आगमों के संघर्षक : आचार्य तुलसी, पृ. 150-159.
- 22 सिंघवी, राजेन्द्र कुमार, आचार्य तुलसी के काव्य में भारतीय सांस्कृतिक मूल्य, पृ. 160-166.
- 23 जैन, अमिता, अणुव्रत एवं नैतिकता के द्वारा सनसामयिक समस्याओं का समाधान, पृ. 167-170.
- 24 भारद्वाज, सत्यनारायण, आचार्य तुलसी-वाङ्मय में सामाजिक चेतना के स्वर, पृ. 171-174.
- 25 राठी, रविन्द्रसिंह, शर्मा, विकास, विश्वशांति का मार्ग : अहिंसा (आचार्य तुलसी के सन्दर्भ में), पृ. 175-181.
- 26 कुण्डलिया, वन्दना, आचार्य तुलसी का अहिंसात्मक आर्थिक चिन्तन, पृ. 182-187.
- 27 भाटी, वीरेन्द्र, आचार्य तुलसी के अणुव्रत दर्शन में नैतिकता, पृ. 188-191.
- 28 भोजक, गिरिराज, सामाजिक क्रांति के पुरोधा, आचार्य तुलसी, पृ. 192-195.
- 29 गंग, नेपाल पवन, अक्षर को प्रणाम : एक समीक्षा, पृ. 196-202.
- 30 जैन, प्रियंका, पुरुषार्थ के पुजारी : आचार्य तुलसी, पृ. 203-208.
- 31 सिंघी, लक्ष्मी, स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में आचार्यश्री तुलसी का योगदान, पृ. 209-212.

जनवरी- मार्च, 2014 (अंक-160)

- 1 जैन, सागरमल, जैनदर्शन में पंचज्ञानवाद, पृ. 38-53.
- 2 अग्रवाल, चम्पा, पुरोहित, अनिला, मुस्लिम शासक और जैन धर्म, पृ. 54-59.
- 3 साध्वी परमप्रभा, क्षमा : सर्वसिद्धिदा, पृ. 60-75.
- 4 जोशी, हेमलता, आचार्य तुलसी का शिक्षा दर्शन, पृ. 76-86.
- 5 गीतम, अदिति, अहिंसा प्रशिक्षण शिक्षा विश्वशान्ति का आधार, पृ. 87-90.
- 6 सिंह, विकास, वैशेषिक दर्शन में प्रमाण मीमांसा : प्रशस्तपादभाष्य विकास सिंह, एवं उपस्कारभाष्य के विशेष सन्दर्भ में, पृ. 91-104.

अप्रैल- दिसम्बर, 2014 (अंक-162-64)

- 1 त्रिपाठी, आनन्द प्रकाश, गीता दर्शन में त्याग की अवधारणा, पृ. 91-97.
- 2 समणी संगीतप्रज्ञा, उत्तराध्ययन सूत्र में मानवीय मूल्य : एक विमर्श, पृ. 98-105.
- 3 समणी सत्यप्रज्ञा, उपनिषदों में अहिंसा के स्वर, पृ. 106-111.
- 4 दाधीच, जुगल किशोर, गांधी का मानवीय अर्थशास्त्र, पृ. 112-118.
- 5 जैन, योगेश कुमार, अद्वैत एवं बौद्ध दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 119-128.
- 6 झा, सुमन कुमार, संस्कृतकाव्यशास्त्र एवं प्राकृतकाव्यसाहित्य, पृ. 129-138.
- 7 इन्दोरिया, सुनीता, आचार्य तुलसी का स्वस्थ समाज संरचना में योगदान, पृ. 139-144.